दीवानी चिपकी

सभी बंधुआ मजदूरों को

मुक्ति दो

बीबियों के चुंगल से मर्दों को छुड़ाओ

दीवाना

दीवाना

अंक : १४ वर्ष : १७ १५ जुलाई १९८१

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख पृष्ठ पर

आप जैसा कोई
मेरी जिन्दगी में आये
तो दीवानी बन जाऊं।
बैठा कर उसे कमरे में
झूम-झूम उसको मैं
जबरदस्ती गाना सुनाऊं॥

आगामी अंक में

***

अगर जानवर मेकअप करते?

***

चौंक चक्करम

***

मुफ्त पोस्टर मेकनरो

दीवाना का अंक आठ हस्तगत हुआ। मुख्यपृष्ठ पर चिल्ली जी ने खूब हंसाया। "लल्लू", तूफानी टक्कर और मदहोश ने बहुत मनोरंजन किया। इस अंक में शेर का ब्लोअप बेहद पसन्द आया। मुझे आप से शिकायत है कि दीवाना इधर काफी देर से पहुंचता है। आपकी पत्रिका हास्य व्यंग्य की एक अनूठी पत्रिका है इससे हमें केवल हंसी ही नहीं बल्कि ज्ञान भी प्राप्त होता है। चूंकि मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूं, इसलिए मुझे 'क्यों और कैसे' स्तम्भ बेहद पसन्द है।

अनिल मदान 'पम्पी' हरियाणा।

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ, पढ़कर बेहद खुशी हुई। इस अंक में बड़ी रोचकता थी। कठपुतलियों का पोस्टर मन को बहुत भाया। घसीटा राम के ख्याली पुलाव, सिलबिल पिलपिल, बुरे फंसे, और नामी चोर आदि बहुत पसन्द आये।

कृपया "मदर टैरैसा" का पोस्टर देने की कृपा करें।

साबर नदीम "गुलशन" अलीगढ़

श्याम गागनानी, मुर्तिजापुर

प्र० : आपने दिवाली पर कौनसी कविता लिखी थी ?

उ० : हारा हुआ मोर्चा नारी ने जीत लिया।
इक्का और जोकर को, बेगम ने पीट दिया।।

अशोक जौहर, 'गगन' देहरादून

प्र० : खाली समय को किस प्रकार बरबाद करना चाहिए ?

उ० : छोड़ सुस्ती, जिन्दगी चुस्ती की जिया-कर।
काम कुछ भी नहीं हो तो फाड़कर के सियाकर।।

रसिक लाल कैसिंगा, (उड़ीसा)

प्र० : शादी से पहिले आपने काकी से लव किया था क्या ?

उ० : क्वारी कन्या उन दिनों छू ले लड़का कोय।
फटाफट्ट जूते पड़े, गंजे खोपड़ी होय।।

चिन्मय महतो, बनफूल, टाटानगर

प्र० : ममता और मुहब्बत में क्या अन्तर हैं ?

उ० : ममता, माता से मिले, मिले पिता से प्यार।
माशूका से मुहब्बत मिलती दिन दो चार।।

रवीन्द्र नाथ सरीन, लुधियाना (पंजाब)

प्र० : इंसान का घंमड कब चकनाचूर होता है ?

उ० : निच्च कोटि की अक्ल है, उच्च कोटि के बोल।
होवें खंड घंमड के, खुले ढोल की पोल।।

कृष्ण नाथ वरवाडिह (पालामू)

प्र० : शादी के बाद कृष्णकुमारी, कृष्णादेवी हो गई तो कृष्ण कुमार ?

उ० : मसला है यह व्यक्तिगत, अपन रहेंगे मौन।
उसे कृष्णदेवा कहो, रोके तुमको कौन।।

अमरजीत सिंह, नई बस्ती, खुरजा

प्र० : पत्नी और जेब कतरे में क्या फर्क है ?

उ० : जेब काट कर हो गया, चम्पत पाकिट-मार।
पत्नी पूरी उम्र भर, सिर पर रहे सवार।।

सुरेन्द्र खुराना, पुराना बाजार, मोगामंडी

प्र० : मोर अपने पैरों को देखकर रोता क्यों है ?

उ० : रंग-बिरंगे पंख सँग, दो कौड़ी के पैर।
ईश्वर तूने निकाला, कौन जन्म का बैर।।

ताबीज

केवल प्रकाश 'लौकी' काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : अच्छा समय किसे कहते हैं और वह कब आता है ?

उ० : बुरा वक्त कहते उसे, जब आसन हिल-जाय।
अच्छे दिन आवें तभी, फिर गद्दी मिल-जाय।।

जगमोहन पुरी, नई दिल्ली-१५

प्र०: कोई-कोई गंजा भी अपनी पाकिट में कंघा क्यों रखता है ?

उ०: गंजा है तो क्या हुआ, कंघा चांद फिराय।
बाल न हों तो क्या हुआ, खुजली तो मिट जाय।।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.

होंगे बच्चे स्वस्थ
फले फूलेगा बचपन
इन्हें पिलाओ....
मुग़ली घुट्टी 555
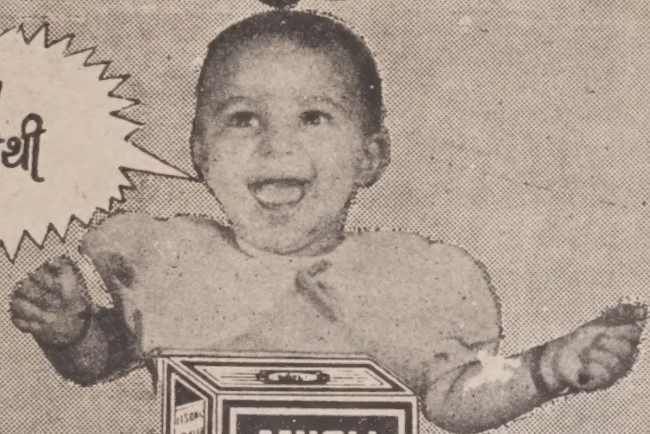
आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा
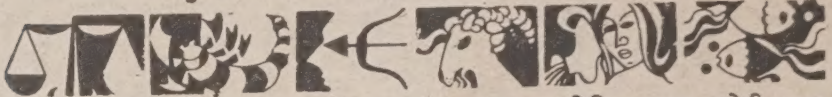
मेष : परिवार से सुख, सेहत नरम, लाभ यथार्थ, घरेलू योजनाओं पर विचार, लाभ खर्च बराबर, यात्रा सफल, स्थायी काम धन्धों से लाभ होता रहेगा, शुभ अशुभ मिश्रित फल मिलेंगे।

वृष : कारोबार से लाभ यथार्थ, शुभ काम पर खर्च होगा, दोस्तों की मदद से काम चलेगा, घरेलू झंझटों से परेशानी, कारोबार प्राय: ठीक चलेगा, आय यथार्थ, यात्रा आस पास की।

मिथुन : आर्थिक दशा अनुकूल रहेगी, लाभ अच्छा, व्यय अधिक होगा, हालत में सुधार होगा, कारोबार में यथार्थ लाभ, काम भी ठीक समय पर बनते रहेंगे, व्यय यथार्थ, यात्रा सफल रहेगी।

कर्क : अफसरों से मेलजोल, यात्रा में सुख, व्यय यथार्थ, सरकारी कामों में परेशानी, घरेलू योजनाओं पर व्यय, कारोबार ठीक चलेगा, मित्र साथ देंगे, संघर्ष काफी रहेगा, लाभ में वृद्धि।

सिंह : लाभ अच्छा, काम भी समय पर बनते रहेंगे, कारोबार सुधरेगा, आय आशा अनुसार, परन्तु व्यय भी कम न होगा, कोई विशेष काम बन जाएगा, झगड़े आदि से परेशानी।

कन्या : धार्मिक कामों में रुचि, हालात ठीक चलेंगे, कारोबार में उन्नति, बिगड़े काम बनते दिखाई देंगे, आय में वृद्धि लेकिन मिलेगी देर से, शत्रु पर विजय, यात्रा लाभप्रद, लाभ अच्छा मिलेगा।

तुला : शारीरिक कष्ट, कोई काम बन कर भी बिगड़ सकता है, वातावरण सुधरेगा, भाग्य साथ देने लगेगा और कोई जरूरी काम बन जाएगा, लाभ खर्च बराबर, हालात ठीक चलेंगे।

वृश्चिक : कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा भी हो सकती है, दिल परेशान, स्वभाव में तेजी, यात्रा सावधानी से करें या छोड़ दें, कारोबार ठीक चलता रहेगा, वातावरण अनुकूल होगा।

धनु : समस्यायें काफी रहेंगी, कामकाज में दिल न लगेगा, हालात सुधरेंगे, समय पर सहायता मिलने से काम भी ठीक समय पर बनते रहेंगे, लाभ अच्छा होगा, मिलेजुले फल मिलेंगे।

मकर : अफसरों से मेल जोल, आय में वृद्धि होगी, सावधानी से रहें, आय यथार्थ, व्यय अधिक, मित्रों से सहयोग मिलेगा, व्यर्थ के झगड़ों से परेशानी होगी।

कुम्भ : यात्रा न करें अन्य हालात अनुकूल हो चलेंगे, कारोवार को स्थिति संतोषजनक, यात्रा में सुख, सेहत को संभाले रखें, आय यथार्थ होगी, व्यय बढ़ेगा।

मीन : परिश्रम काफी रहेगा, आय यथार्थ परन्तु व्यय अधिक होगा, व्यर्थ की समस्याएं पैदा होंगी, यात्रा छोड़ दें, आय में वृद्धि, परिवार से सुख, मित्रों से सहयोग।

चार भाई

—रामकृष्ण शर्मा

चार भाई थे। वे इतने गरीब थे कि कुछ पूछो नहीं। एक दिन भाग्य आजमाने नई जगहों के लिए चल दिए। जैसे ही वे एक सड़क के किनारे चले जा रहे थे, उन्हें एक बूढ़ा आदमी मिला। उसकी दाढ़ी सफेद थी। उसने एक पोटली अपनी लाठी में बांध कर उसे अपने कन्धे पर लटका रखा था। वह देखने में प्रभावशाली और जादूगर-सा लगता था।

उसने चारों भाई से चिल्लाकर कहा—"वाह दोस्तो! तुम खूब मिले। तुम सब कहां जा रहे हो?"

"हम अपनी भाग्य-परीक्षा के लिए जा रहे हैं।" दूसरे भाई ने कहा।

"अगर तुम नीचे के गांव की तरफ जा रहे हो, तो मुझे भी अपने साथ ले चलो।" बूढ़े ने कहा।

चारों ने कहा—"अच्छा, हमारे साथ आओ। रास्ता हम सबके लिए और भी आसान हो जाएगा।" वे चलते ही गए, कुछ देर बाद वे एक चश्मे के पास पहुंचे। चश्मे में दो टोंटियां लगी थीं। वे सब खाना खाने और आराम करने के लिए बैठ गए। सब भाइयों ने अपने हाथ अपने झोलों में डाले और हर एक ने एक-एक काली रोटी का टुकड़ा निकाल लिया। जब वृद्ध आदमी ने देखा कि उनके पास और कुछ खाने को नहीं है, तो उसने अपने थैले में से प्याज निकाली और उसके चार टुकड़े किए और सबको एक-एक टुकड़ा दे दिया। चारों भाइयों ने खाया और कुछ ठंडा पानी पिया और फिर सफर करने के लिए तैयार हो गए। चलने से पहले बड़े भाई ने बहते हुए पानी की तरफ देखा और हंसकर कहने लगा—"क्या ही अच्छा होता, अगर इस चश्मे की टोंटियों में से पानी के स्थान पर शराब निकलती होती। मैं यहां ठहरता और मकान बना लेता। भाइयों, मेरा विश्वास करो, मैं गरीब जाहिल नहीं रहूंगा जैसा कि मैं हूं।"

वृद्ध आदमी ने अपना हाथ उठाया और कहा—"ऐसा ही हो जैसा कि तुम चाहते हो।" उसी समय जादू की एक घटना घटी कि एक टोंटी में से सफेद शराब निकलकर बहने लगी और दूसरी में से लाल शराब। इस जादुई घटना से अचम्भे में आकर तीनों छोटे भाइयों ने बड़े से कहा—"अगर तुमको पथिकों के लिए धर्मशाला बनाने के लिए मदद की जरूरत हो तो हम ठहर जाएं।"

बड़े भाई ने उत्तर दिया—"आप लोग अब जा सकते हैं क्योंकि मेरी जरूरत के लिए यह काफी है! आप लोग कुछ और काम देखें।"

यह सुनकर बाकी तीनों भाई बूढ़े आदमी के साथ चल पड़े। चलते ही चले गए, यहां तक कि वे एक चौरस जमीन के पास जा पहुंचे। उस हमवार जमीन पर तीन बड़ी चट्टानें थीं और दो बड़े सफेद पत्थर उनके बीच में पड़े हुए थे। दूसरा भाई खड़ा हो गया। उसने उस हमवार जमीन और पत्थरों को देखा और हंसकर कहा—"ओह!

अगर ये चट्टान गेहूं के खेतों के रूप में परिवर्तित हो जाएं और ये पत्थर दो बैलों की शक्ल में परिवर्तित हो जाएं तो मैं अपने लिए एक अच्छे पेड़ के तने से हल बनवाऊंगा। मैं इस तमाम खेत को जोतूंगा और अपना अनाज खलिहान से इतना अधिक भरूंगा जितना कि किसी ने कभी नहीं देखा होगा। मेरा विश्वास करो भाइयों, कोई भी गरीब आदमी मेरे घर से भूखा नहीं जायेगा।'

इस पर बूढ़े आदमी ने अपना हाथ एक क्षण के लिये हिलाया और कहा—"ऐसा ही हो।" और दूसरे भाई ने आश्चर्य से देखा कि वे चट्टानें गेहूं के खेत के रूप में और पत्थर सफेद, लम्बे-लम्बे सींगों वाले बैलों के रूप में परिवर्तित हो गये हैं।

दूसरा भाई उन बैलों और गेहूं के ढेरों के साथ रुक गया और अन्य दो भाई आगे अपने रास्ते पर उस वृद्ध आदमी के साथ चल दिए। वे तब तक चलते गए जब तक कि वे एक पहाड़ी के निकट पहुंचे जो कि काली चिड़ियों के बैठने से काली हो रही थी।

"ओह!" तीसरा भाई इसको देखकर चिल्लाया, "देखो वहां कितनी काली चिड़ियां बैठी हैं। यदि वे सब भेड़ों के झुण्ड में बदल जाएं तो मैं उन सबको नीचे लाऊंगा और यहां मैदान में एक पनीर-घर स्थापित करूंगा। भाइयों, मेरा विश्वास करो कि कोई भी व्यक्ति मेरे यहां से बिना मेहमानदारी के और बिना अपनी भूख मिटाए नहीं जाएगा।'

उसके इतना कहते ही उस बूढ़े ने तीन बार हाथ हिलाया और कहा—"ऐसा ही हो।" उसके ऐसा कहते ही काली चिड़ियों का झुण्ड काली भेड़ों के झुण्ड में बदल गया। वह तीसरा भाई उन भेड़ों को देखने वहीं रुक गया और सबसे छोटा भाई उस बूढ़े आदमी के साथ चला गया।

उसी शाम को वे एक गांव में पहुंचे और वहां पर उन्होंने एक शादी होती हुई देखी। बड़े-बड़े ढोल और नगाड़े बज रहे थे। वृद्ध ने पूछा—"क्या मैं तुमको शादी में ले चल सकता हूं?"

चौथे भाई ने उत्तर दिया—"मैं तैयार हूं।"

वे दोनों उस घर में गये, जहां शादी हो रही थी। मकान का दरवाजा पूरा खुला हुआ था। पुजारी लड़की को उसके श्वसुर के पास ले जा रहा था।

बूढ़ा आदमी उनके आगे हो गया और चिल्लाकर बोला—"पुजारीजी और श्वसुर साहब, यह लड़की आपकी नहीं है।"

"अगर यह हमारी नहीं है तो किसकी है?" पुजारी ने कहा।

वृद्ध ने उत्तर दिया—"यह हमारी है।"

श्वसुर ने चिल्लाकर कहा—"यह कैसे हो सकता है?"

"यह इस लड़के की किस्मत है जो मेरे साथ घूम रहा है। अगर आपको मेरे ऊपर विश्वास न हो, तो मेरे लिये अंगूर की दो बेलें लाओ। एक को मैं जमीन में दबाऊंगा और दूसरी को श्वसुर को दबाने को दूंगा। अगर तुम्हारी लगाई हुई बेल ने पत्तों और फल आंखों के सामने दिये तो बहू तुम्हें मिलेगी किन्तु अगर तुम्हारी बेल सूख गई और मेरी बेल में अंगूर लग आए तो बहू इस लड़के को दोगे, जो मेरे साथ है। क्या तुम इन बात पर रजामन्द हो?"

शेष पृष्ठ ४१ पर

घसीटा राम की

दीवानगी

पिछले दिनों घसीटाराम प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर डबल जीरो की प्रयोगशाला से एक गैस का सलैंडर चुरा लाया था। और डाक्टर डबल जीरो का बनाया प्रयोगशाला की निगरानी करने वाला एक आटोमैटिक रोबोट घसीटा राम के पीछे लग गया था। उससे बचने के लिए घसीटा राम ने गैस का सलैंडर मोटू के घर जाकर उसके जन्म दिन पर आये उपहारों के डिब्बों में छुपा दिया था। मोटू पतलू ने उस गैस से एक बहुत बड़ा गुब्बारा फुला लिया था जिससे उनका घर हवा में उड़ गया था। और जब वह दोबारा नीचे आया था तो अपने नीचे घसीटा राम को दबा कर उसका कबाड़ा कर दिया था। मकान गिरने के बाद गैस का सलेंडर नष्ट हो चुका है। घसीटा राम मोटू के बर्थडे पर आये उपहारों में से एक पौधे का गमला उठा लाया है और जूडो मास्टर के साथ-साथ डाक्टर डबल जीरो का बनाया आटोमैटिक रोबोट भी घसीटा राम के घर में आ कर रहने लगा है। इसके बाद के हंगामों का आंखों देखा हाल अब आगे देखिये।

इस लोहे के कबाड़खाने का इलाज तो बाद में सोचेंगे। चलो, पहले यह पौधा मकान के आंगन में लगा दें।

लगता है बहुत कीमती पौधा है। अफ्रीका से किसी दीवाने ने भेजा है।

सुना है, अफरीका में बड़े अजीब-अजीब पौधे होते हैं। रात को जुगनूं की तरह चमक कर आंख मारने वाले पौधे। लड़कियों को देख कर सीटियां बजाने वाले पौधे।

और मैंने तो और बहुत कुछ सुना है अफरीका के पौधों के बारे में कहते हैं वहां ऐसे भी पौधे होते हैं, जिनके फूलों पर सोने के बीज लगते हैं। चांदी की गुठलियां लगती हैं। कुछ पौधों पर सीपियां लगतो हैं, जिनमें से सच्चे मोती निकलते हैं।

कौन जाने यह भी ऐसा ही पौधा हो। इसकी सुनहरी पत्तियों से तो लगता है, यह सोने के बीज देने वाला पौधा है।

क्या बकते हो! उस मुर्गी को तो उसके मालिक ने एक साथ बहुत सारे सोने के ग्रंडे लेने के लालच में एक झटके में काट दिया था। हम अपने मां बाप की तरह इसकी सेवा करेंगे। अपनी औलाद की तरह इसे पालेंगे। और हर फसल पर इनसे सोने के बीज लेंगे।

पर इस पौधे के गमले पर लिखा है, "अफरीका का हाजमेदार पौधा।" इसका क्या मतलब है?

इसके सोने के बीजों से हम बहुत अमीर हो जायेंगे। खूब जम कर माल खायेंगे। और अपना हाजमा बढ़ायेंगे। अब बताओ, यह हाजमेदार पौधा हुआ या नहीं?

सोलह आने हाजमेदार हुआ। तुम ठीक कह रहे हो यार।

चलो, अब अन्दर चल कर किसी तरह इसे यहां से चलता करें।
काम बड़ा मुश्किल है। इसका गैस का सलेंडर इसे लौटा देते, तो शायद यह यहां से दफा हो जाता पर वह तो अब नष्ट हो चुका है।
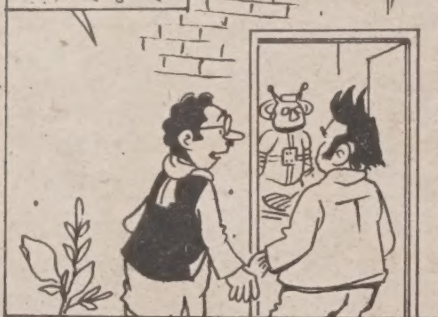
लगता है इसे भूख लगी है। बिप बिप...बिप बिप की आवाज करके कुछ खाने को मांग रहा है।
बिप बिप... बिप बिप।
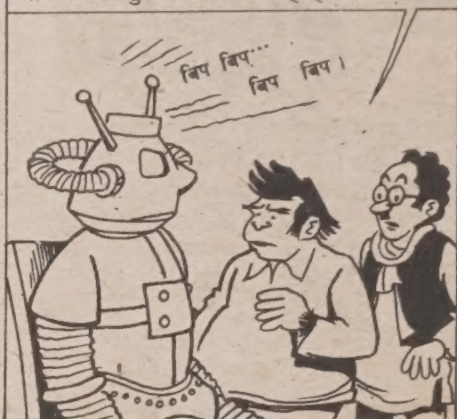
दूसरी ओर डाक्टर डबल जीरो की प्रयोगशाला में।
यह लोग हमारे रोबोट विलियम बाबी को बेवकूफ बनाने के चक्कर में हैं।
तो फिर बाबी को वापस बुला लो डाक्टर।

नहीं। उसे अभी वहीं रहने दो। मुझे यह सिद्ध करना है कि मेरा रोबोट एक आम आदमी से कई हजार गुणा अधिक कुशल और बुद्धिमान है। आम आदमी स्वार्थी है। रोबोट को स्वार्थ छू तक नहीं गया।

आम आदमी हर बात में अपना उल्लू सीधा करता है। यह हर बात में दूसरों के उल्लू के पट्ठे टेढ़ें करता है।
ठीक है डाक्टर, मैं बाबी से कहे देता हूं कि वह वहीं रहे।

उसके कम्प्यूटर में "इंफरमेशन डाटा फीड" करते रहो। उसकी बैट्रियों को चार्ज करके उसे नई शक्ति देते रहो। उसके मैगनैटिक ब्रेन के ओटोमैटिक कैलकूलेटर को "कुईक डिसीजन" लेने के काबिल बनाये रखो।

हैल्लो विल्यम बाबो।
मेकअप योर माइंड।
अटेंशन प्लीज।
हर काम करने के लिये कंट्रोल रूम से सिगनल लेने के लिये तैयार रहो।

दूसरी ओर घसीटा राम के घर में।
बिप बिप— टिप टिप टिप।
ले भूख लगी है, तो मोबिलआयल पीले लोहे के पीपे।
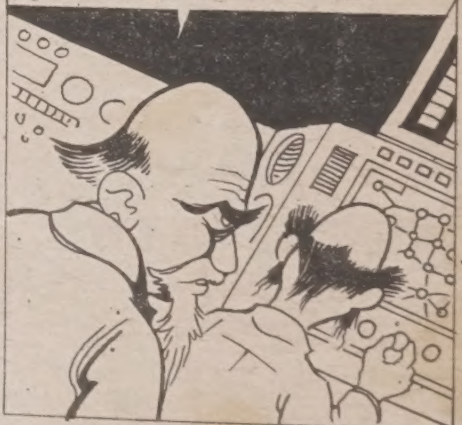
पांच लीटर मोबिल आयल एक सांस में पी गया। ऐसे तो यह हमारा दीवाला निकाल देगा।
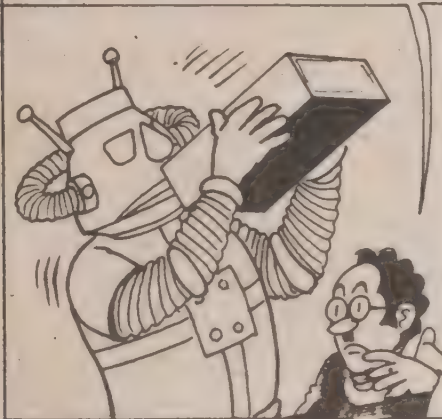
दस मिनट में बीस किलो ग्रीस खा चुका है।
यह कुछ दिन और हमारा मेहमान रहा तो हम दाने-दाने को मोहताज हो जायेंगे।
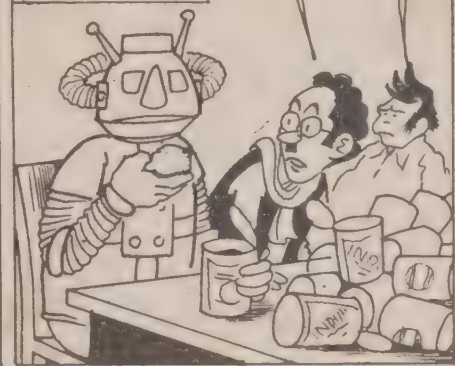
मैंने तो सुना है कि वैज्ञानिक ऐसे ओटोमैटिक मशीनी आदमियों को ऐसे बनाते हैं कि यह कुछ नहीं खाते। हमारी तरह इनका दिमाग तो होता है, पर पेट नहीं होता।
और पेट इस कम्बख्त का ऐसा है कि लगता है, लक्कड़ हजम और पत्थर हजम कर जायेगा।
अब मोबिलआयल का हो रहा है।
INDIAN OIL

ग्रीस के सारे खाली पैकेट खा गया और अब मेज पर रखी प्लेटें खा रहा है।
बिप बिप…बाबी… वैरीगुड बाबी।
कहीं इसने हमारे हाजमेदार पौधे की कोई पत्ती तो नही खा
मेरे पास यह पुस्तक पड़ी है एक बड़े वैज्ञानिक की लिखी हुई। इसमें लिखा है, रोबोट की आदत ऐसी होती है कि उसे तंग न किया जाये तो वह बहुत शराफत से काम लेता है।
हमने इसे बिल्कुल तंग नहीं किया है और यह जितनी शराफत से काम ले रहा है वह तुम जानते ही हो।
दीवाना विज्ञान
आगे लिखा है एक रोबोट घर के समान की सुरक्षा का इतना ख्याल रख सकता है जितना सौ आम आदमी भी नहीं रख सकते।
घर के सामान को तो इसने छुआ तक नहीं है, यह बात हम मानते हैं।
आगे लिखा है, रोबोट दूसरों के नुकसान की बात कभी नहीं सोचता।
मैंने किसी के नुकसान की बात कभी नही सोची। इस हिसाब से तो मैं भी रोबोट हूं।
दीवाना विज्ञान
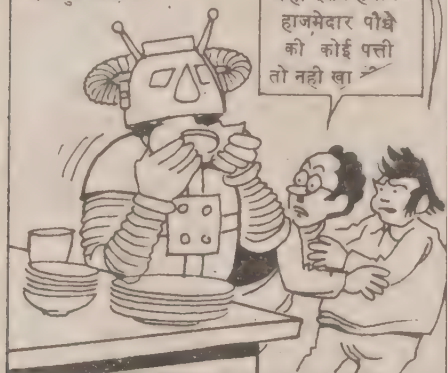
पीछे मुड़ कर देखा तो हाल ही कुछ और था।

सारा सामान खा गया। यह घर के सामान की सुरक्षा का ख्याल रखा है इसने।

पुस्तक में लिखा है, रोबोट का दिमाग किसी को नुकसान पहुंचाने की बात नहीं सोचता।
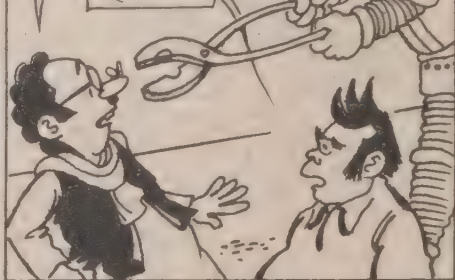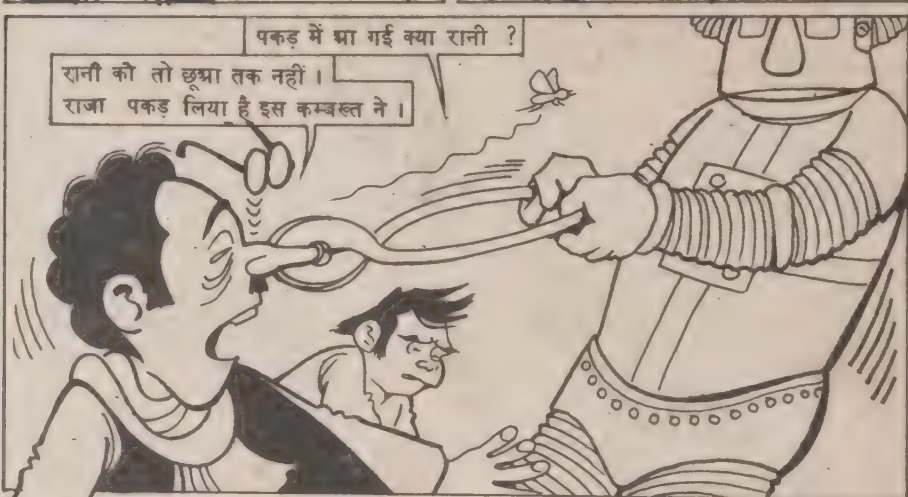
पता नही डाक्टर डबल जीरो ने इसे बनाने में कौनसी भूल की है ? और इसके आटोमैटिक कम्प्यूटर में कैसी गड़बड़ हुई है कि यह हर बात का मतलब गलत समझता है । इसके ब्रेनमैमोरी बैंक का तो भट्टा ही बैठा हुआ है ।

मैंने किताबों में पढ़ा है कि रोबोट एक काम को जितनी कुशलता से कर सकता है, सौ आदमी भी उस काम को इतनी कामयाबी से नहीं कर सकते, संसार का अक्लमन्द से अक्लमन्द आदमी गलती कर सकता है, पर रोबोट कभी भूल कर भी कोई गलती नहीं करता । उसका आटोमैटिक कन्ट्रोल उसे हर काम सही-सही करने के आदेश देता है ।
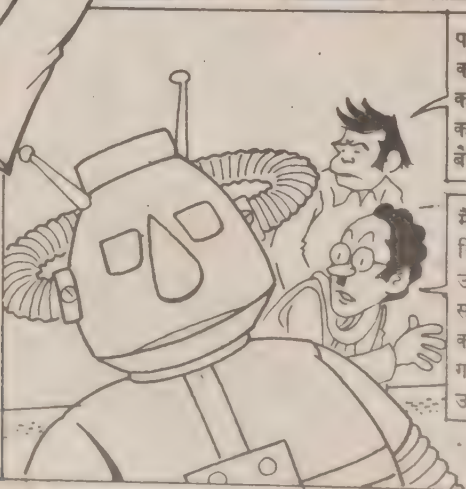
इसका मतलब है, इसके ऑटोमैटिक कन्ट्रोल में गड़बड़ है। इसके मशीनी जिस्म में ऑटोमैटिक कन्ट्रोल कहां फिट किया गया होगा ?
दिमाग में जैसे हमारे जिस्म में होता है। हम कान से कोई बात सुनते हैं। उसे दिमाग तक पहुंचाते हैं और दिमाग का ऑटोमैटिक कन्ट्रोल जिस्म के अलग-अलग भागों को कान की सूचना के अनुसार काम करने का आदेश देता है।
कान जब बात को गलत सुनकर दिमाग को गलत सूचना देगा तो दिमाग बेचारा तो गलत आदेश देगा ही।
क्या पते की बात सोची है। मैं बेकार ही तुझे औंधी खोपड़ी समझता था।
समझ में आ गया। अच्छे मैकेनिक किसी भी मशीन में फाल्ट ढूंढ़ने के लिए मशीन की पहली स्टेज से चैकिंग शुरू करते हैं। दिमाग और उसके ऑटोमैटिक कन्ट्रोल की चैकिंग बाद में करेंगे। पहले देखो कि असल फाल्ट कान में तो नहीं है।
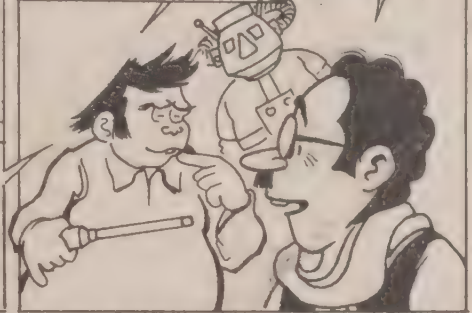
वह देखो ! इस कान में एक स्क्रू ढीला नजर आ रहा है। कान में पेंचकस देकर इसे कस कर देखो।

बेड़ा गर्क हो इस टीन के कनस्तर का ! इसने तेरे कान में पेंचकस मरोड़ दिया है।

गलती मुझसे हुई। मैं यह कहना भूल गया कि कौन किसके कान में पेंचकस देकर स्क्रू कसे। अब ऐसी गलती नहीं होने दूंगा। मैंने भी इस कानखजूरे के कान की दुकान का बोलो ही राम न किया तो मेरा नाम नहीं।
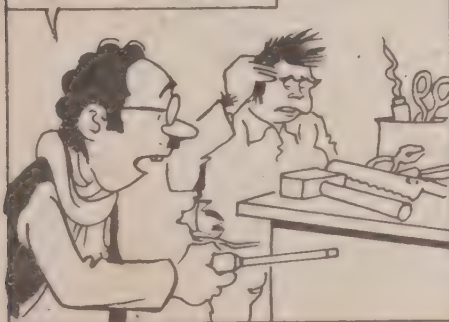
अब कसा जा रहा है स्क्रू। डाक्टर जीरो ने कितना लूज छोड़ रखा था। इतना बड़ा चलता-फिरता कम्प्यूटर बना दिया, और इतनी बारीकी उसे समझ नहीं आई।
छुक... छुक...
चिप चिप चिप चिप
चिक... चिक...
रेल के इंजन की सी कैसी आवाजें आ रही हैं?

आगामी अंक में इन जोकरों के साथ फिर ताली बजाइये और खुशियों का ताला खोलिये।
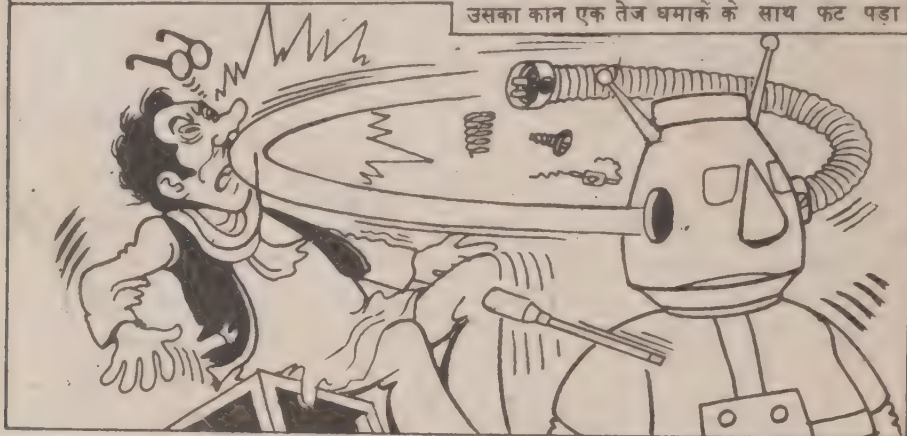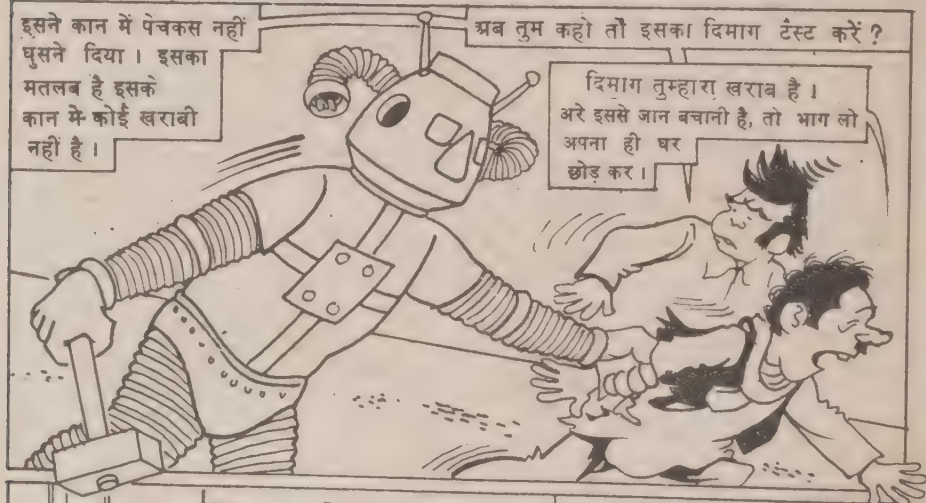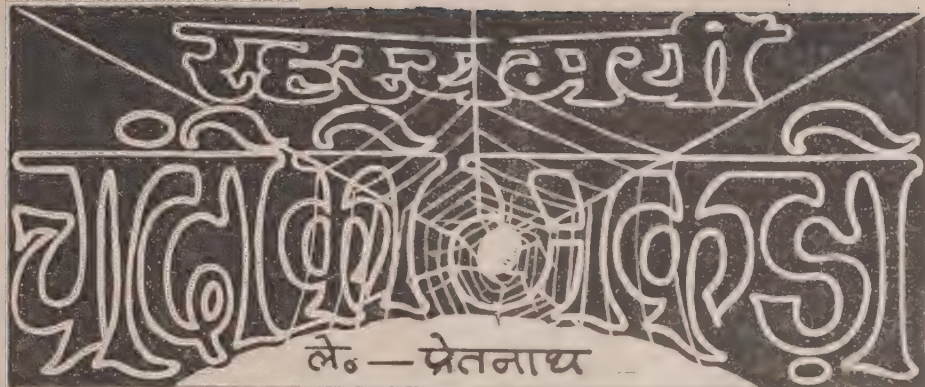
भाग - ५

श्याम ने एक लम्बी सांस छोड़ी "उसे पसन्द नहीं आये ये बिलकुल पक्की बात है," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

"क्योंकि तुम मेरे मित्र हो," जोरो ने कहा "और वो नहीं चाहता मेरे कोई मित्र हों। वो नहीं चाहता कि मै उस की किसी बात का विरोध करूँ और उसे जवाब दूँ। जैसा कि भारत से आने के बाद कुछ दिनों से मैं कर रहा हूँ। परन्तु हम उसे भूल जाते हैं। देखो! ये स्वयं प्रिंस पॉल की तस्वीर है"।

ये कह कर जोरो इन्हें आदमकद तस्वीर के निकट ले गया इसमें खड़ा व्यक्ति चमकते लाल रंग की सुनहरी बटनों की पोशाक पहने था उसके हाथ में तलवार थी जिसकी नोक जमीन को छू रही थी। उसका चेहरा भव्य था और चील जैसी निगाह थी। उसका दूसरा हाथ खुला था जिस पर एक मकड़ी बैठी थी। लड़कों ने उसे बहुत ध्यान से देखा, वह वास्तव में बहुत सुन्दर थी जिसकी मखमल जैसे काले शरीर पर सुनहरी धब्बे थे। मेरे पूर्वज, जोरो ने गर्वपूर्वक कहा "विजेता प्रिंस पॉल, तथा उनके प्राण बचाने वाली मकड़ी"।

तस्वीर को देखते समय लड़कों को अपने पीछे तरह-तरह की भाषाओं जिनमें अंग्रेजी भी शामिल थी की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, कमरे में काफ़ी भीड़ थी जो जाहिर है विदेशी पर्यटकों की थी। इनके पास कैमरे या मार्गदर्शक किताबें या दोनों ही थें। दो शाही पहरेदार कमरे में सावधान खड़े थे इनके हाथों में भाले थे।

एक अमरीकन दम्पति इन चारों के पीछे ही आकर खड़ा हो गया, ऊह! इन्होंने स्त्री को कहते सुना, "देखो वो कितनी गंदी मकड़ी है"।

"चुप"! आदमी ने सावधान करते हुए कहा "इन लोगों को अपनी बात न सुनने दो, ये इंनका भाग्यवान शुभंकर है। इसके अतिरिक्त मकड़ी जैसी साधारणतया समझी जाती है उससे कहीं अच्छी होती है। केवल इन्हें बुरा समझा ही जाता है।

"मुझे कुछ परवाह नहीं है", स्त्री ने जवाब दिया, "यदि मुझे कोई दिख गई तो मैं तो उस पर पैर रख दूँगी"।

श्याम और महिन्दर मुस्कुराये, जोरो की आँखें चमकीं, धीरे-धीरे लड़के सारे कमरे में घूमे और चलते-चलते उस जगह पहुँचे जहाँ एक तीसरा पहरेदार सावधान खड़ा था।

"मुझे अन्दर जाना है, सारजैंट" जोरो बोला, पहरेदार ने अदब से सैल्यूट किया।

"अच्छा, श्रीमान्," वो बोला।

वह एक ओर हट गया, जोरो ने एक चाबी निकाली जिससे पीतल के काम से सजा एक भारी दरवाजा खोला, अन्दर एक छोटा कमरा था। उस के अन्दर एक और

द्वार था जो कोम्बीनेशन ताले से बन्द था जोरो ने इसे खोला और फिर एक तीसरा दरवाजा दिखाई दिया, ये लोहे की जाली से बना था अत में जब ये दरवाजा खोला गया, तो ये लोग आठ फुट के एक बैंक वाल्टनुमा कमरे में पहुँचे। ये वास्तव में बैंक वाल्ट ही था।

यहाँ एक दीवार के पास कुछ शीशे की अलमारिये थीं जिनमें शाही जवाहरात, ताज़, तलवार और कई ज़ंजीरें और अंगुठियाँ थीं।

''महारानी के लिये—जब कभी महारानी होगी ''जोरो ने आभूषणों की ओर संकेत कर के कहा। हमारे पास बहुत से जवाहरात नहीं हैं हम धनवान नहीं है। परन्तु हम इन की रक्षा खूब अच्छी तरह करते हैं जैसा कि तुम लोगों ने अभी देखा ही है। फिर भी मैं तुम्हें वो दिखाता हूँ जो हम देखने आये हैं।

वो कमरे के बीच रखी एक अकेली अलमारी के पास इन्हें ले गया। यहाँ एक विशेष स्टैंड पर एक चांदी की चेन में एक मकड़ी रखी थी। लड़कों ने हैरानी से देखा ये बिलकुल जीवित मकड़ी जैसी थी।

''ये चाँदी पर इनमैल हुआ है,'' जोरो ने समझाया ''तुमने समझा होगा ये निरी चाँदी की होगी?'' नहीं ये चाँदी पर काला इनैमल किया हुआ है जिस पर सुनहरी धब्बे हैं, आँखें लाल चुन्नी की हैं। परन्तु ये तरानिया की असली मकड़ी नहीं है, तरानिया की असली मकड़ी तो इससे बहुत अधिक बढ़िया है।''

जड़ाऊ मकड़ी ने लड़कों को बहुत ही प्रभावित किया, परन्तु असली मकड़ी के इससे उत्तम होने में कोई आशंका नहीं थी, जो जोरो का कहना था। इस मकड़ी को लड़कों ने हर सम्भव कोने से देखा ताकि यदि भाग्यवश इन्हें कहीं असली मकड़ी मिल जाये तो उसे ये तुरन्त पहिचान लें।

''असली मकड़ी को चुरा कर नकली को पिछले सप्ताह ही यहाँ रक्खा गया है'', जोरो ने कड़ुआहट भरे स्वर में कहा। मेरा शक इस काम में ड्यूक स्टीफन पर ही है, उसके सिवा ये काम कोई आदमी नहीं कर सकता। परन्तु सबूत के बिना मैं कुछ बोल नहीं सकता, यहाँ की राजनीतिक हालत नाजुक है। उच्चतम कौंसिल के सारे सदस्य ड्यूक स्टीफन के ही आदमी हैं। जब तक मेरा राजतिलक नहीं हो जाता मेरे हाथ में अधिक ताकत नहीं है और ये लोग नहीं चाहते की मेरा राज तिलक हो और मैं शासक बनूं शाही मकड़ी का चोरी होना इस दिशा में इन लोगों का पहला कदम है।''

''परन्तु मैं तुम्हें इतनी विस्तार से बातें

कर के उबाना नहीं चाहता इसके अतिरिक्त मुझे स्वयं मीटिंग में भी जाना है। मैं तुम लोगों को बाहर ले जा कर, चला जाऊँगा। कार और ड्राईवर बाहर तुम्हारे लिये तैयार है जिसमें तुम लोग शहर के दर्शनीय स्थान घूम आओ। मैं तुम से रात्रि के भोजन के बाद दुबारा मिलूँगा, और फिर हम बात करेंगे''।

वह उन्हें आभूषणों के कमरे के बाहर ले आया और सब दरवाज़े बन्द कर दिये। स्मृतिचिह्नों के कमरे के बाहर निकलते ही उसने उनसे हाथ मिलाया और उन्हें वो स्थान बताया जहाँ कार इनकी प्रतीक्षा में खड़ी थी।

''ड्राईवर का नाम 'रुडी' है वो मेरा वफ़ादार है। मैं भी तुम्हारे साथ चलता'', उसने कहा ''कभी-कभी युवराज होना भी काफ़ी बोरिंग होता है, परन्तु मुझे वह ही रहना चाहिये जो मैं हूँ। जाओ और आनन्द से घूमो, हम रात्रि को फिर मिलेंगे''।

वह तेज़ कदमों से गलियारे में चला गया। श्याम ने सिर खुजलाया ''क्या ख्याल है राजू, क्या हम लोग जोरो की शाही मकड़ी ढूंढ पायेंगे?''

''मालूम नहीं कैसे, जब तक हम बहुत ही खुशकिस्मत न हों,' राजू ने लम्बी साँस छोड़ते हुए उत्तर दिया।'

अशुभ वार्तालाप

तीनों जासूसों ने तरानिया के शहर के भिन्न दृष्टिगोचर नज़ारों को आनन्दपूर्वक देखा। अच्छे बड़े शहर से आये इन तीन लड़कों के लिये तरानिया का शहर अत्यन्त पुराना था। यहीं पर घर तक प्राचीन काल के समान पत्थर के बने थे, इनमें कुछ पीली ईंटों के थे, छतें लाल स्लेट से बनी थीं। हर ब्लाक के बाद फुब्बारे बने थे कबूतर सब स्थानों पर उड़ते दिखाई दे रहे थे विशेष कर सेंट डोमिनिक के गिरजे के सामने।

इनकी कार पुराने माडल की घूमने वाली खुली गाड़ी थी तथा इसका चालक सुन्दर
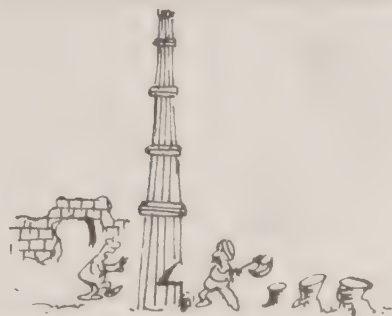
वर्दी पहिने नवयुवक था जो अच्छी अंग्रेजी जानता था। उसका नाम रुडी था तथा उसने इन्हें धीमी आवाज़ में आश्वासन दिया था कि वो युवराज जोरो का वफादार नौकर है और ये लोग उस पर भरोसा कर सकते हैं।

ये लोग डैन्जों से बाहर पहाड़ी इलाके में पहुँच गये जहाँ से वे नदी का दृश्य देखना चाहते थे। जब वे कुछ तस्वीर ले कर वापिस कार में बैठने लगे, रुडी ने धीमे स्वर में कुछ कहा।

''हमारा पीछा हो रहा है,'' वह बोला ''जब से हम महल से चले हैं हमारा पीछा हो रहा है। अब मै तुम्हें बाग को ले चलता हूँ, उसके भीतर घूमते हुए तमाशा दिखाने वालों को देखना, परन्तु पीछे न देखना, उन्हें पता न चलने पाये कि हमें उनका पता चल गया है''।

पीछे न देखना। आदेश का पालन काफी कठिन है, उनका पीछा कौन कर रहा है? और क्यों कर रहा है?

''काश! हमें मालूम होता ये सब क्या हो रहा है,'' महिन्दर बड़बड़ाया, ''और कोई हमारा पीछा क्यों कर रहा है, हमें तो कुछ भी मालूम नहीं है।''

''शायद कोई सोचता होगा, हमें कुछ मालूम है'', राजू ने सुझाया।

''कोई चाहता है हमें मालूम हो, श्याम बोला ''मैं चाहता हूँ''। रुडी ने कार को रोका ये लोग एक बड़े से पेड़ों से भरे

शेष पृष्ठ २४ पर

नामी चोर

BANK
मोर्चा मार लिया चेले. पहले कार चुराई फिर बैंक लूटा. हमारा भी जवाब नहीं.

हमारे जवाब के पीछे पुलिस का सवाल लगा है गुरू! गाड़ी और तेज़ चलाओ.
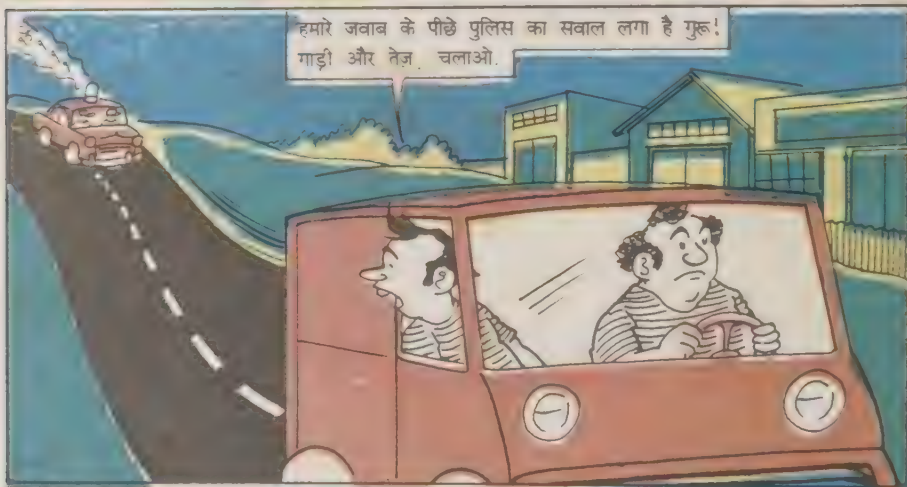
मारे गये गुरू, पुलिस की गाड़ी जोंक बन कर चिपटी है.
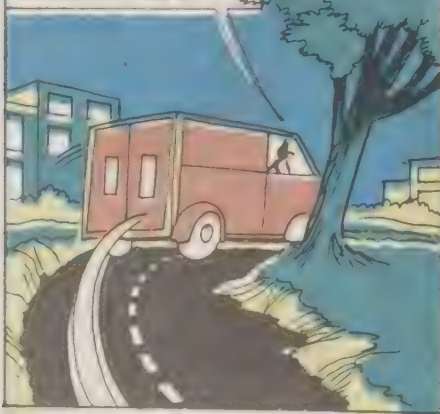
पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर कोई ऐसा डाज दे कि इन के फ़रिश्ते भी हमें हाथ न लगा सकें.

उन की कोशिश थी कि पुलिस उन के हाथ न लगा सके. और वास्तव में पुलिस ने उन के हाथ नहीं लगाया.

अगर गुरू चेला जिन्दा बचे तो आगामी अंक में फिर उपस्थित होंगे.

पृष्ठ २१ से आगे

चौकोर के निकट पहुँच गये थे जहाँ बहुत से लोग घूम रहे थे। यहाँ हल्का-हल्का संगीत का स्वर भी सुनाई दे रहा था।

''ये हमारा मुख्य बाग है, रुडी गाड़ी से बाहर लड़कों के लिये कार का दरवाज़ा खोलते हुए बोला ''धीरे-धीरे बैंड स्टैन्ड के करीब से चले जाओ और जब तमाशा दिखाने वाले मदारी और जोकरों के निकट पहुँचो तो तस्वीरें लेना। फिर गुब्बारे बेचने वाली लड़की से फोटो खींचने की आज्ञा माँगना, वह मेरी बहन ऐलीना है। मैं तुम लोगों के वापिस आने तक यहीं प्रतीक्षा करुँगा। और हाँ! पीछे न देखना, शायद तुम्हारा पीछा होता रहे, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है कम से कम अभी तो नहीं।''

''कम से कम अभी तो नहीं।'' महिन्दर ने दोहराया और वे धीरे-धीरे पेड़ों के नीचे होते हुए संगीत की दिशा में बढ़े ''चलो! कुछ तो सोचने को हुआ''।

''हम जोरो की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं, ये सब तो अंधे कुऐं में पानी निकालने के समान है, हम तो कुछ भी नहीं कर सकते। श्याम पूछने लगा।

''हमें घटनाओं के परिवर्तन की प्रतीक्षा करनी है'', राजू बोला ''मेरे विचार से हमारा पीछे ये पता लगाने के लिये हो रहा है कि हम किसी से मिलते तो नहीं? जैसे वीरेशनाथ, वे कुछ आगे चले और एक खुले स्थान पर पहुँच गये जहाँ बहुत से व्यक्ति घास पर बैठे थे, छोटे से बैंड स्टैड पर भड़कीली पोशाक में आठ आदमी जोर-जोर से बैंड बजा रहे थे, उन्होंने धुन समाप्त की तो सबने तालियाँ बजाई, जैसे की प्रशंसा से उत्साहित हो कर वे और भी जोर से बैंड बजायें। तुरन्त ही बैंड वालों ने दूसरी धुन बजानी आरम्भ कर दी।

तीनों जासूस बैंड स्टैंड के चारों ओर धीरे धीरे चलने लगे। वहाँ बहुत से लोग चारों ओर घूम रहे थे और इन्हें पता नहीं चल पाया कि कोई इनका पीछा कर रहा है या नहीं, धीरे-धीरे ये लोग एक छोटे से पक्के किये हुए स्थान पर पहुँचे। यहाँ रुडी के बताये तमाशायी बैठे थे, वहाँ दो नट तरह तरह की कलाबाज़ियाँ तथा अन्य खेल दिखा रहे थे दो एक जोकर लोगों के बीच कलाबाजियाँ लगा रहे थे इन जोकरों के हाथ

बन्द करो बकवास
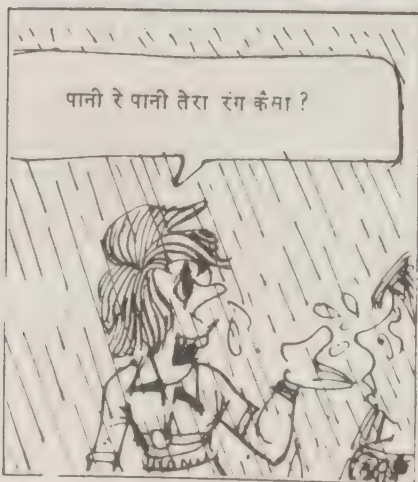
में टोकरियाँ थीं जिनमें आते-जाते लोग पैसे डाल देते थे। एक अत्यन्त सुन्दर लड़की स्वदेशी वेषभूषा पहिने बड़ा सा गुब्बारों का गुच्छा लिये पास ही खड़ी थी। गुब्बारे बेचते हुए वह अंग्रेज़ी में एक गाना गा रही थी जिसमें कहा गया था कि गैस भरा गुब्बारा लेकर छोड़ दो तो वह तुम्हारी इच्छाओं को आकाश में ले जायेगा। बहुत से व्यक्ति गुब्बारे ख़रीद कर आकाश में छोड़ रहे थे जो आकाश में सुन्दर लाल, पीले नीले गुम्बद से दिखाई देते थे जब तक आँखों से ओझल न हो जायें।

''मसखरों की तस्वीर खींचो, महिन्दर'' राजू ने आदेश दिया। मैं नटों की कुछ तस्वीरें लूँगा। श्याम तुम चारों ओर से सचेत रहो और देखते रहो, यदि कुछ विशेष दिखाई दे तो ध्यान में रखो।

''ठीक है पहले'', महिन्दर कलाबाजी खाते मसखरे की ओर चल दिया।

श्याम के करीब खड़े राजू ने नटों की ओर अपने कैमरे का रुख किया। वह उसको कुछ ठीक सा करता प्रतीत हुआ, वास्तव में वह शक्तिशाली वाकी-टाकी का बटन दबा रहा था।

''पहला हूँ'' उसने धीमे स्वर में कहा ''आप मुझे सुन रहे हो'', ''बिलकुल साफ़ और तेज़'', वीरिशनाथ का स्वर कैमरे में से सुनाई दिया ''क्या हाल है?''

''हम सैरसपाटे के लिये निकले हैं, युवराज जोरो ने हमसे तरानिया की शाही मकड़ी की खोज में सहायता माँगी है जिसकी चोरी हो गई है और उसके स्थान पर नकली मकड़ी रख दी गई है,'' उसने वाकीटाकी में कहा।

''ओह ओ! वीरिशनाथ बोले, ''ये तो जैसा मैने समझा था उससे भी बुरा हुआ, क्या तुम उसकी सहायता कर सकते हो''? ''मुझे पता नहीं कैसे करेंगे'', राजू बोला।

''न ही मुझे मालूम है तुम कैसे करोगे''
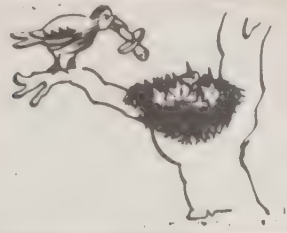
वीरिशनाथ सहमत हुए ''परन्तु इसके साथ ही रहो और आँखे खुली रखो, कुछ और है?''

''हम लोग बाग में हैं और शायद हमारा पीछा करा गया है, परन्तु मालूम नहीं किसने पीछा किया है।'' ''उन लोगों को देखने का प्रयास करना, तथा बाद में मुझे बताना, परन्तु मुझे से बात तभी करना जब अकेले हो, इस प्रकार यहाँ बात करने से किसी को शक होने का डर है''। यह कह कर वीरिशनाथ ने सम्पर्क समाप्त कर दिया राजू ने अपनी तस्वीरें लीं जबकि श्याम आसपास सावधानी से देखता रहा। और जब उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दिया जो उनका पीछा करता प्रतीत होता हो, तो उसने मसखरे की टोकरी में कुछ पैसे डाल दिये।

ठीक इसी समय मसखरों ने एक छेटा सा सुन्दर बालों वाला सफेद कुत्ता छोड़ा, जिसे देखने के लिये चारों ओर से आदमी उसके निकट से खिसक गये जिससे एक क्षण के लिये गुब्बारे वाली लड़की अकेली हो गई।

''अब हम गुब्बारे वाली लड़की का फोटो लेंगे,'' राजू ने दूसरों से कहा। वे तीनों आगे बढ़ गये और अपना कैमरा लड़की की ओर केंद्रित किया। लड़की इन्हें देख कर मुस्कुरायी तथा उनके लिये खड़ी हो गई और राजू ने उसकी फोटो ली, फिर वो लड़की अपने गुब्बारों के साथ इनके निकट आ गई।

''एक गुब्बारा लीजिये'', वो बोली, ''और इसे छोड़िये ताकि ये आपकी इच्छाओं को ले कर आकाश में उड़ जायें''।

क्रमशः
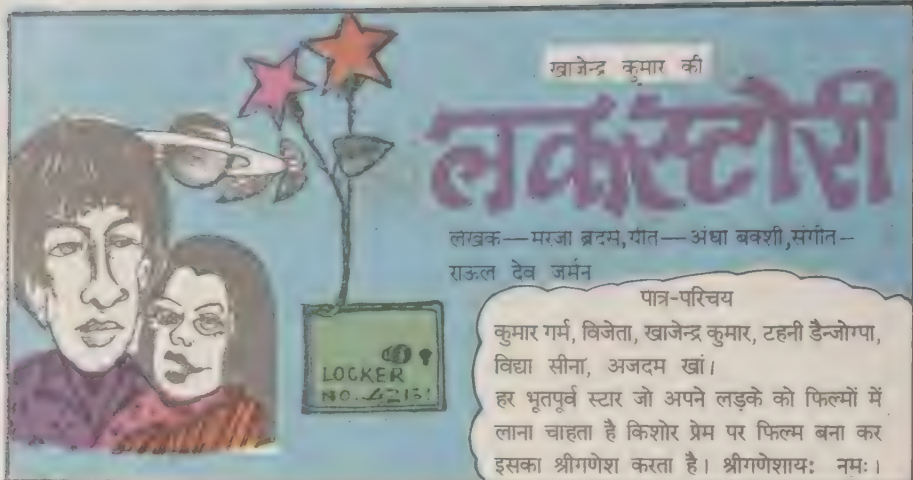
खाजेन्द्र कुमार की
लवस्टोरी
लखक—मरजा ब्रदस, गीत—अंधा बक्शी, संगीत—राऊल देव जर्मन
LOCKER NO. 4213!
पात्र-परिचय
कुमार गर्म, विजेता, खाजेन्द्र कुमार, टहनी डैन्जोग्पा, विद्या सीना, अजदम खां।
हर भूतपूर्व स्टार जो अपने लड़के को फिल्मों में लाना चाहता है किशोर प्रेम पर फिल्म बना कर इसका श्रीगणेश करता है। श्रीगणेशायः नमः।
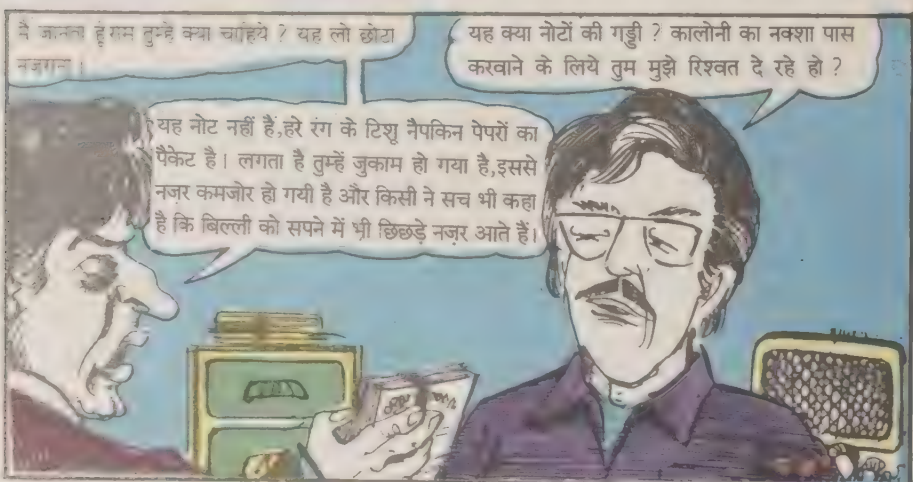
जानता हूं राम तुम्हे क्या चाहिये ? यह लो छोटा नजरान।
यह क्या नोटों की गड्डी ? कालोनी का नक्शा पास करवाने के लिये तुम मुझे रिश्वत दे रहे हो ?
यह नोट नहीं हैं, हरे रंग के टिशू नैपकिन पेपरों का पैकेट है। लगता है तुम्हें जुकाम हो गया है, इससे नज़र कमजोर हो गयी है और किसी ने सच भी कहा है कि बिल्ली को सपने में भी छिछड़े नज़र आते हैं।

आज राम ने मेरी बड़ी बेइज्जती की। राम साथ डास करना चाहता है। डास करते हुये तुम उसे थप्पड़ मारना।
थप्पड़ मारुँ। ऐसी क्या बेइज्जती कर डाली उसने तुम्हारी ? क्या तुम्हें अपने दफ्तर से चपरासी बुला कर निकलवा दिया ?
इतनी सी बात तो मै माइंड न करता। उसने तो मेरे रुमाल से नाक पौंछा और बाद में थैंक्यू तक नहीं कहा।

राम, मैं अपनी शादी दीवान साहब की लड़की से कर रहा हूं, तुम ही सुमन को सम्भालो।
यह बिमारी मेरे गले क्यों बांध रहे हो ? नक्शा पास न करने की इतनी बड़ी सज़ा!
यह तुम्हें थप्पड़ भी नहीं मार सकी तो गृहस्थी कैसे सम्भालेगी ? गृहस्थी के घर में कॉकरोच कितने होते हैं उन्हें मारना पड़ता है। थप्पड़ मार-मार कर ही तो चपातियां बनती हैं। मच्छर मारने के लिये भी थप्पड़ चलाना पड़ता है।

ओह गॉड, साढ़े ग्यारह। घंटी बेटे आज मारे गये। डैडी इंतजार कर रहे होंगे, इतनी जल्दी इतना टायम कैसे हो गया ? दो घंटे लेट हो गया।
यह तो कुछ भी नहीं है। फिल्मी घड़ी सुपर सॉनिक स्पीड से चलती है। तुम्हारे इस फिल्म में प्रवेश से पहले दो मिनट में १९ साल बीतते दिखाया गया था।

बेटे तुम्हें आर्किटैक्ट ही बनना होगा। जो मैं कहूंगा वही होगा।
मैं आर्किटैक्ट नहीं बनूंगा, आप समझते क्यों नहीं डैडी। डैडी वह जमाना चला गया जब हीरो फिल्मों में डाक्टर, इंजीनियर, वकील, जज और आर्किटैक्ट बना करते थे। आजकल हीरो को कुछ नहीं बनना पड़ता। बस उसे मोटरसाइकिल चलानी आनी चाहिये। आप जिद्द करेंगे तो मैं घर छोड़ दूंगा।

शेष पृष्ठ ३० पर

प्र० : क्या ग्लू या गोंद बनाने के लिये घोड़ों का प्रयोग किया जाता है?

बीरबल मेहर—रायगढ़

उ० : 'आसंजक' एक ऐसा चिपचिपा पदार्थ होता है जो वस्तुओं को एक साथ जोड़ने के काम आता है। आसंजक कई भिन्न पदार्थों से बनाये जाते हैं। सबसे आधुनिक आसंजक एक प्रकार की राल होती है, जो कच्चे रसायनिक पदार्थों से बनाई जाती है।

ग्लू भी एक प्रकार का आसंजक है, जो कोलागन नामक प्रोटीन से बनता है। ग्लू को एक बहुत ही विशेष ढंग से बनाया जाता है। अधिकतर लोग हर प्रकार के आसंजक को ग्लू कहते हैं जो कि तकनीकी तौर पर सही नहीं है। ग्लू बनाने में प्रयोग किया जाने वाला प्रोटीन कोलागन ही वह विशेष तत्व है जो जानवरों तथा मछलियों की टिशू में पाया जाता है। ग्लू के लिये कच्चा माल जानवरों की हड्डियाँ तथा खालें उबाल कर प्राप्त किया जाता है। और इस प्रकार दूसरे जानवरों के साथ घोड़ों की हड्डियाँ और खालें भी मरने के बाद इस काम में लाई जाती हैं। वास्तव में हड्डियों से निकले तत्व से एक प्रकार का ग्लू और खालों से दूसरे प्रकार का ग्लू बनता है।

चिपकाने के पदार्थ की आवश्यकता मनुष्य को पुरातन काल में ही पड़ गई थी। आदि मानव वस्तुओं को चिपकाने के लिये राल तथा पेड़ों की गोंद से वस्तुओं को चिपकाते थे, परन्तु ग्लू—जानवरों की हड्डियों और खालों से प्राप्त भी हज़ारों वर्षों से बनती आई है। सन् १५०० बी.सी. के प्राचीन काल में मिस्र में लकड़ी चिपकाने के लिये ऐसी ग्लू प्रयोग में लाई जाती थी।

सबसे बड़ा बदलाव ग्लू बनाने में १९३० के लगभग कृत्रिम राल के विकास के बाद आया। ये आसंजक प्राकृतिक गोंद या ग्लू से अधिक शक्तिशाली तथा अधिक चलनेवाले साबित हुए। इसके अतिरिक्त इन पर पानी, मोल्ड तथा फूई का कोई प्रभाव नहीं हुआ (जानवरों से प्राप्त ग्लू गरम पानी में आसानी से घुल जाती है) आधुनिक कृत्रिम आसंजक तो इतने शक्तिशाली हैं कि कुछ किस्मों के हवाई जहाज़ों के धातु के ढाँचों को मिसाईल से इन से ही चिपकाया जाता है।
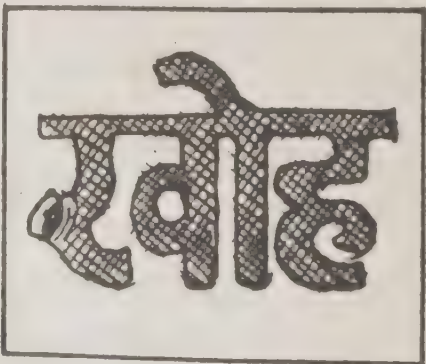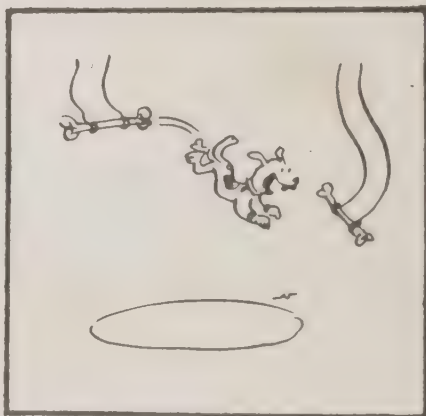
क्यों और कैसे?

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२
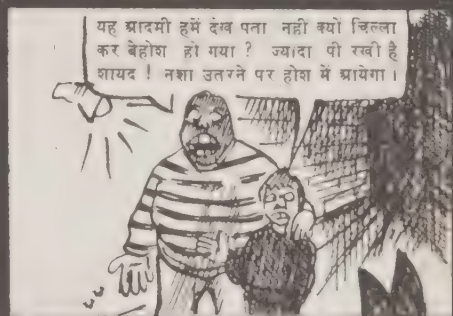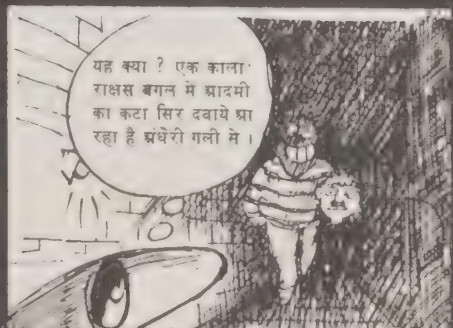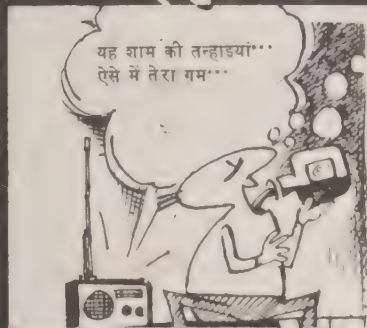
पिरामिड के चमत्कार

पिरामिड या सूचीस्तम्भ सदा ही मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। वैज्ञानिक इनके रहस्य खोजने का प्रयत्न करते रहते हैं। परन्तु खोज और जानकारी से 'ग्रेट पिरामिड' के रहस्य की गहराई में कोई अन्तर नहीं आया है। पिरामिडों की गुप्तशक्ति अभी भी मनुष्य को आश्चर्य चकित किये है।

पिरामिड में रखने से बदरंग हुए आभूषणों में चमक आ जाती है। शराब, कॉफी तथा फलों के रस और खाने की वस्तुओं को कुछ समय तक पिरामिड में रखने से, इनका स्वाद अच्छा हो जाता है। दूध कई दिन तक ताजा रहता है और फिर दही बन जाता है। ईटली की एक दूध कम्पनी पिरामिड की शक्ल के डिब्बे प्रयोग करती है, तो एक फ्राँसीसी फर्म ने दही बनाने के लिये पिरामिड की शक्ल के एक बरतन को पेटेन्ट करवा लिया है।

खाने की वस्तुऐं, विशेषकर माँस और अंडे पिरामिड या पिरामिड जैसी इमारत में रखने से बिना बदबू के सूख जाते हैं। फूल भी पिरामिड में रखने से रंग और आकार नष्ट हुए बिना सूख जाते हैं। सबसे रोचक बात यह है कि पौधे पिरामिड के भीतर बहुत जल्दी बढ़ते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि पिरामिड में रखा पानी मुँह पर लगाने का लोशन बनाने से चेहरा लम्बे अरसे तक जवान रहता है। परन्तु यह बात बिलकुल पक्की है कि कटा तथा चोट इत्यादि पिरामिड में जल्दी अच्छी होती है। बहुत से लोगों का कहना है कि पिरामिड में कुछ देर बैठने से गठिया का दर्द, बाय का दर्द, दाँत के दर्द और माइग्रेन सिर दर्द को छुटकारा मिला है।

पृष्ठ २७ से आगे

देखो बेटे चिंकी, तुम उसी से शादी करोगी जिसे हम चाहेंगे। हमने घर जवाई तलाश कर लिया है।
मुझे घर जंवाई नहीं चाहिये।
आपने ज्यादा जिद्द की तो मैं घर से भाग जाऊंगी।
बेटे समझने की कोशिश करो। आजकल घर के लिये नौकर मिलने का यही तरीका रह गया है।

मैं सिपाही शेरसिंह बोल रहा हूं। यह दो घर से भागे बच्चे पिंकी और घंटी मुझ से बच कर भाग रहे हैं। मैं इनको एक ही हथकड़ी पहना कर ला रहा था. शोले में गब्बर सिंह की भूमिका में सफल होने के बाद खा-खा कर मैं इतना मोटा हो गया हूं कि मेरी गर्दन देख बैल भी शर्मा जाता है। हाथ की अंगुलियां इतनी मोटी हो गयी हैं कि कद्दू से छोटी चीज पकड़ में ही नहीं आती इसीलिये हथकड़ी का सिरा कब हाथ से निकला, पता ही नहीं लगा।

देखो मैने देखा है इक सपना, फूहड़ों के शहर में है घर अपना, कौन मुआ है . . .तू कहां है . . .
आजा।
मै आई . . .आई . . .आई . . .
कितना उदासीन है यह सपना फूहड़ों के शहर में है, घर अपना। कौन मुआ है . . .तू कहां है
मै आया आया ऽऽऽ
यहां तेरा मेरा कूड़ा पड़ा है
उसमें बासी पूड़ा पड़ा है
यहां है केले का छिलका जहां तू खड़ी है
गंदगी बड़ी है आ जाओ।

अपनी पहली पिक्चर है यह दिवानीऽऽऽ
लेकिन तू डिम्पल नहीं यही एक गम है।
खाता हूं खाऊंगा पहले यहां ,आओ काम नवां है तू कहां है . . .
आजा
अच्छा यह बातओ मर रही क्यों तुम्हारी नानी . . .
बॉबी के तर्ज पर है यही क्या कम है ?
छोड़ो, मत रोओ, शिलाजीत खाओ
मैं आई आई आई
कितना उदासीन है यह सपना फूहड़ों के शहर में है घर अपना।

चिंकी चलो, हम शादी कर लें मंदिर में।
मैं घर जंवाई नहीं बन सकता। पहली ही फिल्म में मेरी इमेज खराब हो जायेगी।
घर वापिस चलो। मेरे पापा मुझे बहुत प्यार करते हैं। वह हम दोनों की शादी कर लेंगे। मेरे पापा कब से घर जंवाई तलाश कर रहे हैं।
अच्छा मान लो हम शादी भी कर लें तो खायेंगे क्या ? अगर शम्मी कपूर की तरह उछल कूद कर सकते तो,पेड़ों से फल तोड़ बंदरों की तरह गुजारा करते।

मैं जा रहा हूँ। पेड़ काटने की मज़दूरी करूँगा।
मुझे क्या पता कि पेड़ काटने के लिये कुल्हाड़ा चाहिये। मेरा तो गरीबों से वास्ता तब ही पड़ा जब इस फिल्म की शूटिंग शुरू हुयी। वहां मैंने देखा कि जूनियर लोग चमचा गिरी करके दिन काट रहे हैं। मैंने सोचा चमचागिरी से दिन कटते हैं तो कड़छी से पेड़ कटने चाहियें।
पेड़ काटना है तो कड़छी लेकर क्यों जा रहे हो ? यह कुल्हाड़ा ले कर जाओ। यही तो खराबी है,अमीरों के लड़के गरीब का रोल करने लगते हैं। पता कुछ होता नहीं।

बेटा चिंकी, हमने तुम्हें कहां-२ नहीं ढूंढ़ा। बेटा अब घर चलो। हम हार गये,तुम इसीलिये घर से भाग गई थीं न कि हम तुम्हें कुर्सियों पर चूइंगम चिपकाने नहीं देते थे ? अब हम तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। तुम चाहो तो सोफों पर भी चिऊंगम चिपका देना, चाहो तो अपनी मम्मी के जूड़े में भी टेप देना।
रियली डैडी।

बेटा सती मत हो। अगर यह हीरोइन तुझे अच्छी नहीं लगी तो कोई बात नहीं। अगली फिल्म में नई हीरोइन ला दूंगा। वह चली गई तो जाने दे। अच्छा पीछा छूटा।
उसके जाने का गम नहीं है पापा। वह मेरे तेईस रुपये साथ ले गई। मेहनत करके वह पैसे कमा कर उसे दे रखे थे। उसका क्या होगा ?

मिस्टर राम, ऐसा अन्याय मत कीजिये। पिछली बातें भूल जाइये। हमारे वह तेईस रुपये लौटा दीजिये। उन रुपयों के गम में हम बाप बेटे शेव करना भूल गये हैं। हम दोनों की बढ़ी हुई दाड़ियां इसकी गवाह हैं।
उन रुपयों से तो हम भेल पूरी खा आये। मेरी चिंकी ने भी तो खाना पकाया था, कपड़े धोये थे,उस घर की सफाई की थी। वह क्या मुफ्त में लगाना चाहते हो ?

मेरे पैसे दे दो वर्ना मैं गला घौंट दूंगा। चलो मान भी लिया कि चिंकी ने कपड़े धोये थे, खाना पकाया था। जनानी की दिहाड़ी के रेट से साढ़े इक्कीस रुपये बनते हैं। वह काट लो। हालांकि खाना वह मेरे से ज्यादा खाती थी। फिर भी डेढ़ रुपया तो बचता ही है . .
घंटी तुमने मेरे डैडी पर हाथ उठाया ?
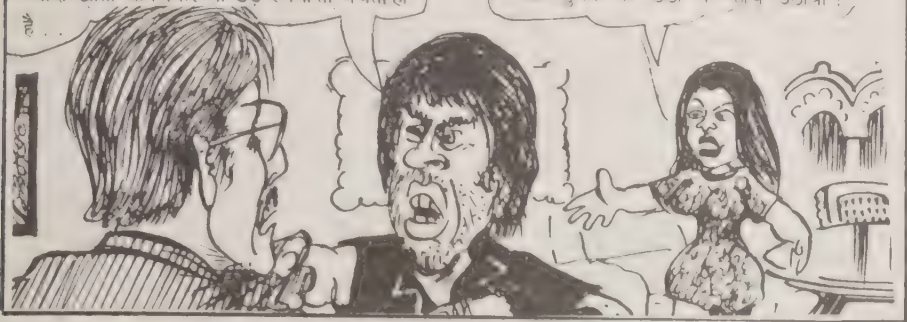
तुम लोग औलाद के लिये झगड़ रहे हो न। जब औलाद ही नहीं रहेगी तो काहे के लिये लड़ोगे। उधर देखो हिन्दू महासभा वाले चिंकी के खिलाफ जलूस लेकर आये हैं। उनका कहना है कि औरतों का घर के काम के लिये दिहाडी मांगना हिन्दू सभ्यता के खिलाफ है।उधर नारी स्वतंत्रता वाले घंटी के खिलाफ जलूस ले आये हैं,वे कह रहे हैं चिंकी की दिहाड़ी घंटी के बराबर ही मानी जाये दोनों जलूसों के बीच वे दोनों घिसने वाले हैं।

अब सोचता हूं कि चिंकी की शादी घंटी से कर ही दी जाये। लड़ना तो दोनों सीख ही गये हैं। उन तेईस रुपयों का झगड़ा बैठ कर उम्र भर निबटाते रहें। अगर हम लोग लेबर कोर्ट गये तो खर्चा बहुत होगा।
यही तो मै कह रहा था,मैंने तुम्हारे पल्ले यह बिमारी बांधी थी तुम मेरे बेटे के गले अपनी बिमारी मढ़ कर बदला लो।
फिर हम चारों बैठ कर ताश खेल सकेंगे

सवाल यह है?

आगामी अंक में कुछ और फड़कते हुये सवाल आप को लाजवाब बना देंगे.

खिसको दीवाने

नाज़िया हसन की सुरीली आवाज में कुर्बानी के गाने की कुर्बानी

असल गाना

आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी में आये,
तो बात बन जाये . . .हां हां बात बन जाये.
फूल को बहार बहार को चमन,
हर किसी को चाहिये तन मन का मिलन,
काश मुझ पर भी ऐसा आप का दिल आये,
तो बात बन जाये . . .हां हां बात बन जाये.
आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी में आये,
तो बात बन जाये . . . हां हां बात बन जाये.
मैं इन्सान हूं फरिश्ता नहीं
डर है बहक ना जाऊं कहीं,
तनहां दिल ना सम्भलेगा,
प्यार बिना ये भटकेगा,
आप सा कहां है दिल आप ही को चाहे,
तो बात बन जाये . . .हां हां बात बन जाये.
आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी में आये
तो बात बन जाये . .

गीत की कुर्बानी

आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी में आये,
तो बाप बन जाये . . .हां हां बाप बन जाये.
तुम फूल मैं बहार मेरा नाजुक है बदन
हर किसी को चाहिये ऐसा गुलबदन,
काश इस रोनी सूरत पे मुर्दनी न छाये,
तो बाप बन जाये . . .हां हां बाप बन जाये.
आप जैसा कोई मेरी ज़िन्दगी में आये,
तो बाप बन जाये हा हा बाप बन जाये
गर्म तूफान हूं ठंडा उपला नहीं
डर है दहक ना जाऊं कहीं,
तनहां दिल कब तक भटकेगा,
प्यार की सूली पे कब लटकेगा,
आप जैसा लल्लू पंजू अपने को फंसाये,
तो बाप बन जाये . . .हां हां बाप बन जाये,
आप जैसा कोई मेरी ज़िंदगी में आये,
तो बाप बन जाये . . .हां हां बाप बन जाये.
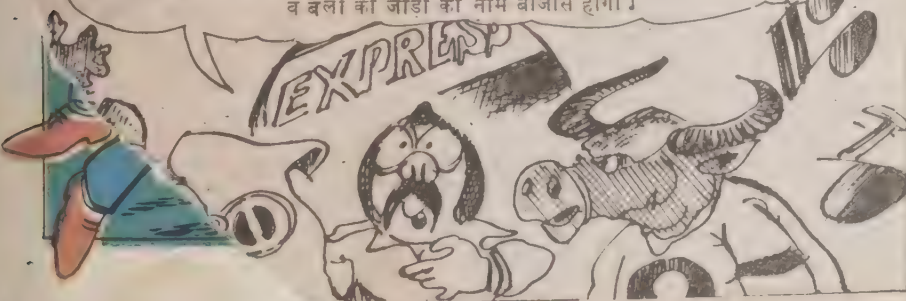
प्रेम बाबू शर्मा, बगीची पीरिजी : चाचा जी, जिन्दगी का असली मतलब क्या है ?

उ. मौत आने तक जिन्दगी की खाट खड़ी किये जाना और यह शेर गुनगुनाना

ये जानते हुए भी के तू बा वफा नहीं,
ऐ उम्र तेरा साथ दिए जा रहा हूं मैं।

शैलेश चौहान, आजाद, कटिहार : चाचा जी, कृपया यह बतायें कि आपकी चांद पर ग्रहण कब लगेगा ?

उ. हमने आपका पत्र उत्तर के लिए अपनी श्रीमती जी के पास भेज दिया है। हमारी चांद की बुराई भलाई उन्हीं के हाथ में है।

विकास कमोडिया, जयपुर : इन्सान शैतान कब बन जाता है ?

उ. : उल्टा प्रश्न पूछा है आ[illegible]
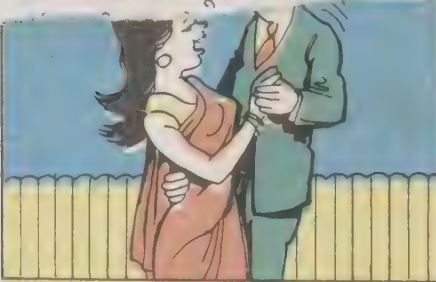
उ. : हम सोते जागते, उटते-बैठते शेर गुनगुनाते रहते हैं, और प्रभाव किसे कहते हैं ?

धर्मेन्द्र सिंह, जगदलपुर : मोटू-पतलू अकलमंदी के काम कर रहे हैं, पर मोटू आजकल बेवकूफी के काम क्यों कर रहा है ?

उ. : अपनी ओर से तो घसीटा राम भी अकलमन्दी के काम ही कर रहा है। यह अलग बात है कि दूसरों के लिये वह जो गडढ़ा खोदता है, उसमें खुद ही जा पड़ता है।

प्रहलाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया, मण्डला : चाचा जी, नेता कब सच बोलता है ?

उ. : जब वह कहता है, 'भाईयों, देश [illegible] बड़ा संकट आने वाला है।' [illegible] से आवाज आती है, [illegible]देव।'

[illegible]चा जी, [illegible] ताज- [illegible]का

सवाल यह है? चलो यह वादा तो पूरा हुआ कि विवाह की पहली सालगिरह पर, हम पहाड़ों पर स्नोफाल देख कर आयेंगे. मेरा विचार था परिवार नियोजन के आफिस में काम करने वालों को कोई बात याद नहीं रहती !

सिलबिल पिलपिल
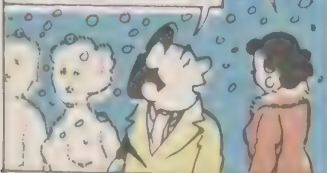
डिस्को ज्वर
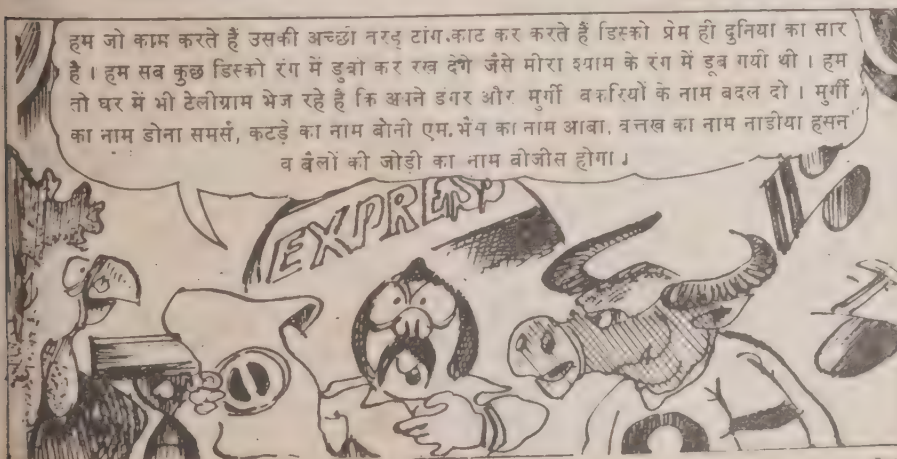
हमें पता है कि डिस्को की डगर उतनी ही कठिन होगी जितनी प्रेम की डगर। हमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। पहाड़ खोद कर दूध की नदी लानी पड़ेगी। आने वाली फसलों का पैसा कैसेट्स और एल. पी. रिकार्ड खरीदने में लग जायेगा। डिस्को म्यूजिक का शोर होगा तो मकान मालिक और पड़ोसी लड़ेंगे। उन्हीं से लड़ने के लिये हम यह महाराजा रणजीत सिंह की तोप लाये हैं। जो शिकायत लेकर सर पर आयेगा उस पर इस तोप से टमाटर व अण्डे बरसाये जायेंगे।

अब से हम मच्छरों से नफरत नहीं करेंगे, वह हमारे साथ ही रहेंगे। यह लो हमने स्प्रे करने वाला पम्प खिड़की से बाहर फेंक दिया। मच्छर हमें काटेंगे और हम रात भर डिस्को स्टायल में शरीर खुजलायेंगे। तड़फेंगे, शरीर मरोड़ेंगे मच्छर मारेंगे। नींद में भी हम डिस्को डांसिंग की प्रैक्टिस करेंगे।

अब से हमारे मकान में तुम डिस्को स्वर लहरियों के सिवा और कुछ नहीं सुनोगे। हमारे सारे काम डिस्को म्यूजिक की लय पर होंगे।
सिलबिल इज ए कूल कैट यार।
आदमी कोई काम करे तो पूरे मन से करे। हमारे देश में यही खराबी है लोग आधे अधूरे मन से सारे काम करते हैं।

तुम्हारे मुंह पर क्या हो गया ? यह काटे के निशान और खून निकल रहा है । क्या तुम किसी से लड़ कर आ रहे हो ?
मैं डिस्को म्यूजिक के साथ शेव कर रहा था ।

कोई बात नहीं इसका मतलब यह नहीं है कि डिस्को म्यूजिक खराब है,यह ब्लेड बनाने वाले इतने तेज ब्लेड बनाते ही क्यों हैं । खैर यह तो छोटे-छोटे जख्म हैं आदमी सच्चाई की राह पर गर्दन भी कटा देता है और आज की सच्चाई डिस्को डांसिंग है ।
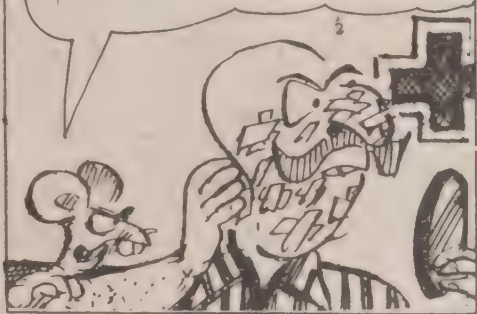
इब सिलबिल को क्या हो गया ? क्या डिस्को ने कोई नया गुल खिलाया है ? तेरा मुँह भी कट गया ? नहीं यह तो ब्रुश करने लगा था ।
बचाओ!
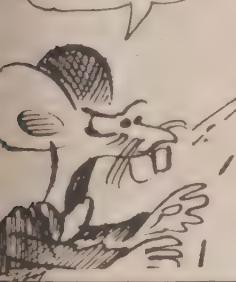
जब मैं ब्रुश करने ही वाला था तो रिकार्ड चेंजर ने बोनी एम का रिकार्ड लगा दिया । मैं क्या करता ? डांस करते हुए ब्रुश करने की कोशिश करी तो ब्रुश पूरा झटके के साथ नथुने के अन्दर घुस गया इब कुछ करो मेरी आधी सांस रुक गयी है ।
मैं अभी पिलपिल को बुलाता हूं ।
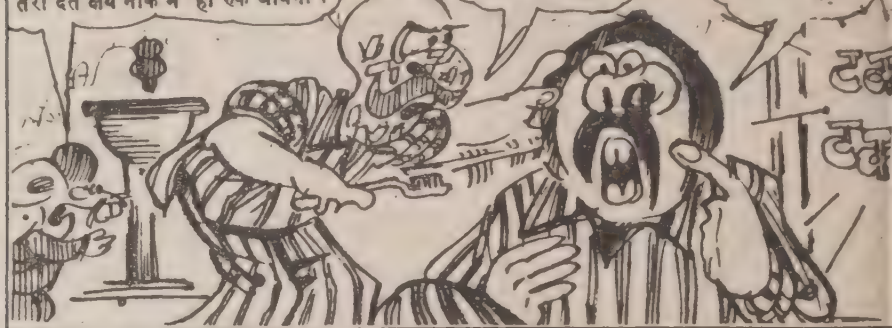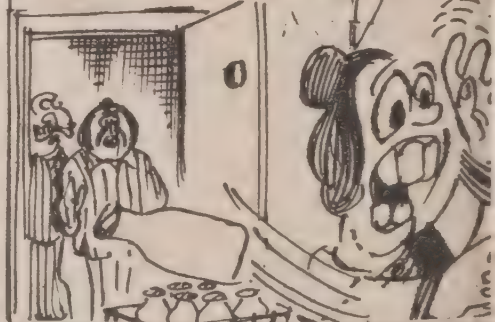
सिलबिल-पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

पृष्ठ १० से आगे

"ऐसा ही होगा।" श्वसुर ने जवाब दिया और फौरन ही गांव की सबसे अच्छी अंगूर की बेल में से टहनियां तोड़ लाए।

वृद्ध पुरुष ने एक बेल को अच्छी तरीके से जमा दिया और श्वसुर ने दूसरी को दबा दिया। सारा गांव चारों तरफ यह देखने के लिए इकट्ठा हो गया कि क्या होता है? थोड़ी देर पश्चात् घूमने वाले बूढ़े की टहनी में से पत्तियां फूट निकलीं और गुच्छों की शक्ल में हो गईं और फल पकने शुरू हो गये और श्वसुर की टहनी सूखकर काली पड़ गई।

यह अचम्भे की बात देख शादी में जो मेहमान आये थे उन्होंने सोचा कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। उन्होंने बहू को उस जवान के सपुर्द कर दिया। वृद्ध पुरुष ने बेल से एक पका हुआ अंगूर खाया और वर-वधू को विदाई दी और रात में ही चलता बना। चौथा भाई पत्नी के साथ रहने के लिए ठहर गया।

दस साल बीत गए। घूमने वाले बूढ़े ने यह तय किया कि वह चारों भाइयों के पास जाए और यह देखे, कि वे क्या कर रहे हैं तथा एक गरीब आदमी की किस प्रकार आवभगत करते हैं। पहले वह धर्मशाला वाले के पास पहुंचा। जिस समय उसने दरवाजे को खटखटाया और अन्दर गया उस समय रात होने जा रही थी।

"नमस्ते भाई!" आगन्तुक ने कहा और उसने अपना थैला और छड़ी एक कोने में रख दी।

किन्तु उस बूढ़े खूसट आदमी को धर्मशाला वाले ने कोई जवाब नहीं दिया। वृद्ध पुरुष ने आगे कहना शुरू किया—"ओह! मैंने कितना लम्बा सफर तय किया है और काफी से ज्यादा थक गया हूं। मैं प्यासा भी हूं। क्या ही अच्छा हो कि आप मुझको एक गिलास शराब दें।"

धर्मशाला के मालिक ने पूछा—"आप पैसा अदा कर सकते हैं?"

बूढ़े ने कहा—"मुझ जैसा गरीब और अभागा आदमी पैसा कहां से लाएगा?"

"यहां बिना पैसे के शराब नहीं मिलती।" धर्मशाला के मालिक ने कहा, "यह किसी प्रकार भी नहीं हो सकता।"

वृद्ध पुरुष ने धीरे से कहा—"अगर ऐसा नहीं हो सकता तो कृपा करके मुझे इस धर्मशाला में सो जाने दीजिए। बाहर ठंडी हवा चल रही है और मैं बीमार आदमी हूं।"

"मेरी धर्मशाला भिखमंगों के लिए नहीं है!" धर्मशाला के मालिक ने चिल्लाकर कहा और वृद्ध पुरुष को धक्का देकर बाहर निकाल दिया। उसके झोले और लड़की को भी बाहर फेंक दिया।

वृद्ध पुरुष नीचे को झुका। उसने अपने झोले और लाठी को उठाया और कन्धे पर रखकर धर्मशाला की ओर देखकर कहा—"यह जैसी दस वर्ष पहले थी वैसे ही हो जाये।"

एक क्षण के अन्दर वह धर्मशाला उसी पुराने पहाड़ी सोते के रूप में बदल गई और शराब के बजाय उसकी टोंटियों में से निर्मल सफेद पानी निकलने लगा।

धर्मशाला के मालिक ने अपने होंठ चबा डाले और सिर के बालों को नोच डाला; किन्तु अब क्या हो सकता था?

वृद्ध पुरुष दूसरे भाई के पास गया और उसने उसको जहां अनाज मे से

शेष पृष्ठ ५८ पर

फैण्टम-जंगल शहर

लुआगा तुम मेरा क्या करोगे ?
मैं तो तुम्हें इसी समय नीचे फैंक देना पसन्द करूँगा, बाबाबू !

परन्तु जिस गणतन्त्र को तुम नष्ट करना चाहते थे, उसके कारण तुम्हारे साथ इन्साफ़ किया जायेगा !
वैसे ही, जरा अपने जबड़े को तो देखो !

मुझे बताया गया है, यह चिह्न कभी मिटता नहीं है !
नहीं, जब तक कि इसके साथ ही सिर को भी काट न दिया जाये। यह एक यादगार रहेगी बाबाबू, कहीं तुम फिर हमें भूल जाओ !
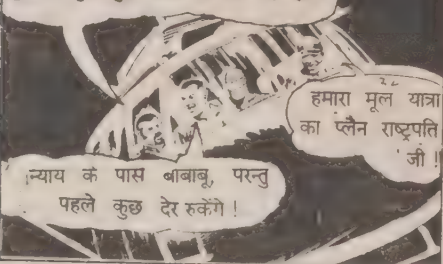
लुआगा तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो ?
हमारा मूल यात्रा का प्लैन राष्ट्रपति जी !
न्याय के पास बाबाबू, परन्तु पहले कुछ देर रुकेंगे !

ठीक है ! कैप्टन पहले हम दो बच्चों से मिलेंगे !
बच्चे !

अंकल वाकर !
चलते फिरते भूत के लिये।
ज़ुम्बा जल्दी करो, जल्दी करो !
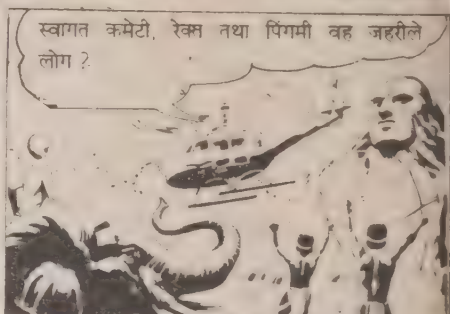
स्वागत कमेटी, रेक्स तथा पिंगमी वह जहरीले लोग ?

रेक्स तुम्हें राष्ट्रपति लुआगा याद है ?
जी हाँ ! विवाह के अवसर से !
रेक्स, तुम से मिल कर सचमुच बहुत खुशी हुई !
हम सब को अच्छे खाने के लिये बहुत ही भूख लगी है, इस बदमाश अपराधी को भी !
श्रीमान अच्छा रहेगा यदि में यान के पास ही रहूँ !
कैप्टन यहाँ कोई खतरा नहीं है, यह यहाँ सुरक्षित है बन्दर इसका ध्यान रखेगा। इसके दो चार फुट के भीतर कुछ भी नहीं आ सकेगा।
मै आपका मतलब समझ गया !
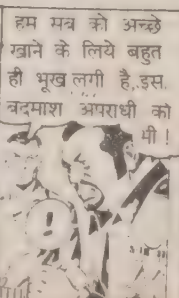
एक अच्छा जुलूस है !
साँस बन्द कर लो आगे जलप्रपात है !

यह घने जंगलों का गुप्त द्वार है।
गल्प !

प्रिये !
हैलो !
डियाना !
हैलो !

ओह, हमें तुम्हारी याद आती रही, साथ ही चिन्ता भी लगी रही !
चिन्ता की कोई बात नहीं थी, लुआगा को ढूंढ़ने में समय लग गया।

हम तो कई दिन से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे है, क्या हुआ ?
थोड़ी देर लग गई, डियाना कुछ विशेष नहीं !

अरे ! यह कौन है ?
एक बदमाश अपराधी, जिसे हमने रास्ते से पकड़ा है।
!
मैं तो बच्चों को देखने आया हूं, वे कहाँ है ?

हैलो इस तथा किट, बहुत सुन्दर !
धन्यवाद, ओह यह तो बहुत भारी होते जा रहे हैं।

हैलो इस को मुझे दे दो, मुझे सुन्दर लड़कियाँ बहुत प्यारी लगती हैं।
कोई भेदभाव नहीं राष्ट्रपति साहब, किट को भी पकड़िये !

राष्ट्रपति जी अब तो आपको भी परिवार आरम्भ करना चाहियें।

जंगल में खुशी का समय !
बहुत बढ़िया खाना है, मैंने दो दिन से कुछ नहीं खाया !
जहाँ आप थे, वहाँ कोई आपका ध्यान नहीं रख रहा था !
क्यों नहीं !

मै हथकडी पहने-पहने नहीं खा सकता !
कैप्टन इन्हें उतार दो !

यदि मैं यहाँ से निकल जाऊँ तो सीधा यान पर

बाबाबू तुमने हमें काफी परेशान किया है, पहले तो तुमने राष्ट्रपति लुआगा का अपहरण कर हत्या करनी चाही। और अब हमारी दावत का सत्यानाश कर दिया।

प्रथम श्रेणी क्रिकेट को अलविदा

आखिर बेदी ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा कर दी।

आज से बीस-बाइस वर्ष पहले अमृतसर के गांधी मैदान में एक सिख युवक केवल एक क्रिकेट वाले पिच पर निरन्तर गेंद फेंकने का अभ्यास करता देखा जाता था। लोग मुस्करा देते। यही युवक आगे चलकर बिशन सिंह बेदी के नाम से विश्व विख्यात स्पिनर बना। बेदी नें जीवन भर उसी लगन का परिचय दिया। वेस्टइंडीज के गैरी सोवर्स की टीम के विरुद्ध 1966 में कलकत्ता में बेदी नें टैस्ट जीवन बहुत निराशाजनक रूप में आरम्भ किया। बिना कोई विकेट लिये 72 रन दिये। परन्तु जब 19 नवम्बर 1978 को कराची में पाकिस्तान के विरूद्ध बेदी न अन्तिम टैस्ट खेला तो वे 266 विकेटें ले चुके थे टैस्ट इतिहास में केवल गिब्ज और ट्रूमैन ही उनसे अधिक विकेट लेने में सफल हुए थे।

बेदी का प्रथम श्रेणी क्रिकेट जीवन
आंकड़ों के दर्पण में

टेस्ट बल्लेबाजी

विरुद्ध	टैस्ट	पारिया	आऊट नहीं	रन	उच्चतम	औसत	अर्धशतक
वेस्टइंडीज	18	24	4	140	20	7.00	—
पाकिस्तान	3	5	1	9	4	2.25	—
इगलेंड	22	35	9	179	20	6.88	—
आस्ट्रेलिया	12	21	11	131	26	13.10	—
न्यूजीलेंड	12	16	3	196	50	15.07	1
टोटल	67	101	28	655	50	8.98	1

टैस्ट गेंदबाजी

गेंदें	मेडन	रन	विकेटें	औसत	5 विकेट पारी में	10 विकेट पारी में	सर्वष्ठ प्रदर्शन	कप्तानी
5437	272	2163	62	34.88	1	—	5-82	2
1828	24	449	6	74.83	—	—	3-124	3
7173	373	2539	85	29.87	4	—	6- 71	2
4033	176	1395	56	24.91	5	1	7- 98	5
3883	251	1091	57	19.14	4	—	6- 42	5
21364	1096	7537	266	28.71	14	1	7- 98	22

प्रथम श्रेणी क्रिकेट-के सम्पूर्ण आंकड़े

बल्लेबाजी
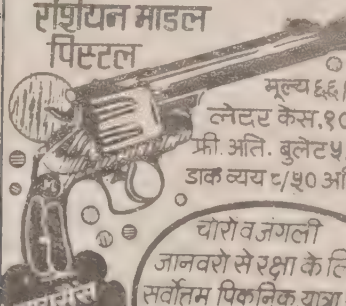
विरुद्ध	टैस्ट	पारियां	आऊट नहीं	रन	उच्चतम	औसत	अर्धशतक
टैस्ट	67	101	28	656	50	8.98	1
रणजी	75	87	13	934	61	12.62	2
दलीपट्राफी	16	24	4	285	58	14.25	2
दुरानी	4	6	2	104	56	26.00	1
यू. एफ. टी.	74	57	19	315	20	8.28	—
नार्थेम्टन शायर	91	101	20	830	61	10.24	1
टोटल	327	376	20	3124	61	10.76	7

गेंदबाजी

गेंदे	मेडेन	रन	विकेटें	औसत	5 विकेट पारी में	10 विकेट पारी में	सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	कप्तानी
21364	1096	7637	266	28.71	14	1	22	
17472	984	6016	402	14.21	33	8	46	
3410	170	1331	52	25.59	3	—	10	
1168	60	520	16	32.50	1	—	2	
17053	860	6598	270	23.61	20	3	19	
19830	1102	7648	371	20.61	22	4	—	
टोटल : 80297	4279	29750	1386	21.46	93	16	99	

● बड़ी गृहस्थी वाला आदमी वह है जिसके जिम्मे कई छोटे-छोटे पेट पालने के लिए होते हैं और एक बड़ा पेट जिसमें कोई बात नहीं पचती।

ऐसा मौसम बरसात का
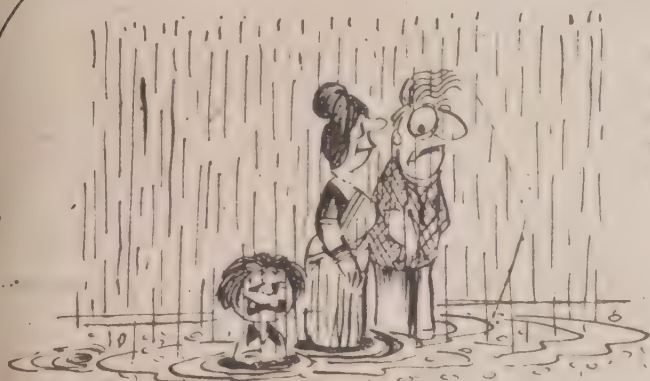
यह मौसम है बगैर निकर या पैंट उतारे सू सू करने का । किसी को पता भी नहीं लगता कि आपने क्या किया ।

यह मौसम है फायरबिग्रेड वालों के लिये डयूटी पर नॉवल पढ़ने का या ताश खेलने का ।

यह मौसम है लाला लोगों के लिये चीनी, शक्कर, कोयला व लकड़ी को पानी में तर कर वज़न बढ़ाने का ।
यह मौसम है सिगरेट पीने वालों से बात न करने का क्योंकि गीली माचिसों के न जलने के कारण वे खीज से भरे होते हैं.
यह मौसम है गृहणियों के लिये ऊपर देखते रहने का । नीचे नज़र की तो फर्श का बुरा हाल देख दिल का दौरा पड़ सकता है ।
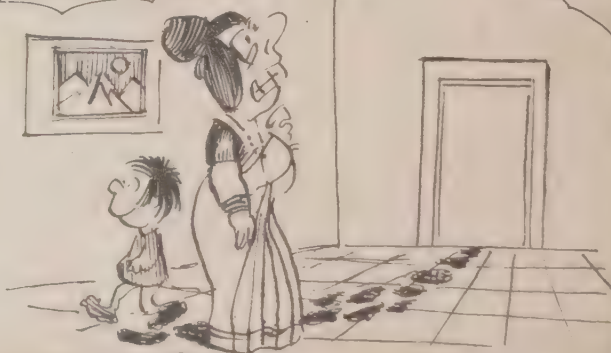
यह मौसम है ऊपर वाले फ्लैट वालों के लिये नीचे वालों पर हंसने का । (बाकी सारा साल नीचे वाले ऊपर वालों पर हंसते रहे हैं उनके फ्लैटों में पानी की तंगी देख)।
यह मौसम है कार वालों के लिये कानों में रुई ठूंसने का । (वर्ना सात पीढ़ियां गालियों के कीचड़ में लथपथ होती सुनाई देंगी)।
यह मौसम है सब्जी दाल के न जलने का । पतीले को ठीक नीचे वहां रखिये जहां पानी टपकता है । उसके बाद आप मजे से मैराथन गप्प गोष्ठी कर सकती हैं बेखटके ।
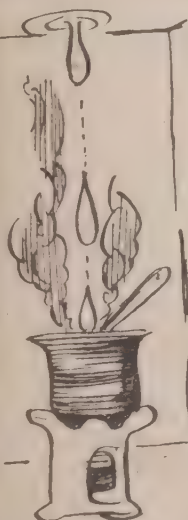
दीवाना फ्रेंड्स क्लब

गोविन्द अग्रवाल द्वारा श्यामजीमो. ट्रेडर्स, 33 टालिगंज, सरकुलर रोड कलकत्ता-700043, 17 वर्ष, क्रिकेट

एस.एम. फाहिम, जवाहरनगर, रोड नं. 13, म.नं. 111, पो. आजाद नगर, जमशेदपुर-12, 17 वर्ष ।

टीटू, म. नं. 4114, गली केसरू वाली, पहाड़ गंज नई दिल्ली-55, 18 वर्ष, गाना बजाना ।

ठाकुर भीम सिंह, म. नं 15-103, गुरु मूर्ति नगर, पो. बाला नगर हैदराबाद-37 (आं प्र) 25 वर्ष ।

ठाकुर अशोकसिंह, म. नं. 15-103, गुरु मूर्ति नगर, हैदराबाद-37, (आं. प्र.) 20 वर्ष, पत्र-मित्रता ।

राज कुमार बुधवानी, कंटोरा तालाब, रायपुर, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना ।

रजनीश कुमार रोमू, एम. जी. रोड, खगड़िया-851204 (बिहार) 20 वर्ष, पत्र-मैत्री, फरमाईश ।

सरैती मंगला, मौड मण्डी म. नं 102 गली नं. 5, मौड मण्डी-9 21 वर्ष, कार चलाना ।

पं. शक्ति धर, छपा मोहल्ला, नई आबादी, होशियारपुर, पंजाब, 22 वर्ष, मित्रता, कविता ।

तजिन्द्र सिंह 'ऋषि', मनं. 575, सैक्टर 20 ए, चण्डीगढ़ 20 वर्ष, दुश्मनों की पिटाई करना ।

प्रमोद कुमार गुप्ता 'चंचल' 4114, बालूगंडा आगरा-1, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता ।

अश्वनी धींगड़ा 'बिट्टू', खुशीराम धुलखराज, फजलका, 18 वर्ष, इंगलिश म्यूजिक बजाना ।

रमेश कुमार गुप्ता, 'गोव वकीलों की गली, चौतीना कुंआ, बीकानेर 16 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

अशोक कुमार, 41-ए, मनीराम रोड, ऋषिकेश, जिला देहरादून, 16 वर्ष, क्रिकेट खेलना ।

रिजुवेद प्र. खि. 'रिजुवेद' जे. 1515, क्रीड़ांगना निकेतन, जहांगीर पुरी, दिल्ली-33, 22 वर्ष ।
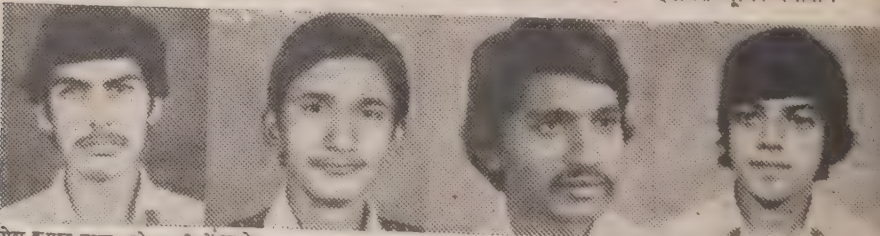
राकेश कुमार अरोड़ा, मोलडेन परसीयन स्टोर, 14 वर्ष, टेबल टेनिस, दीवाना पढ़ना ।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

न्द्र शेखर, 4872, लप्पे शाह राजन गर्ग, विशालभारत ट्रांस-रामदेव गूडगील्लां, गूडगील्लां जीवन कुमार छत्री, मधुबन मैर-
बाजार, जगराओ-142026, 18 पोर्ट, मोगा मण्डी-142001, 19 प्रदर्स, रणजीत सीह मार्केट, जूना हवा, नेपाल, अंचल लु. जि. रूप-
वर्ष, दोस्ती करना, पत्र-मित्रता। वर्ष, नावल पढ़ना, क्रिकेट। मोठा मान्देड, 27 वर्ष, सैर करना। देही, 17 वर्ष, म्यूजिक डांस।

सत्य नारायण जोशी, बैंफरोड, महेश चन्द नागपाल, 101।12, नवीन कुमार जैन, ॥ ए 122, विपन कनौजिया, एम. जी. ग्राम-
भैरहवा सिद्धार्थ नगर, वाड नं. 5, पानीपत, करनाल, (हरियाणा) नेहरू नगर, गाजियाबाद-201001, टेस, चौक मीना बाजार, लुधि-
17 वर्ष, दोस्ती करना। 18 वर्ष, दोस्ती करना। 23 वर्ष, जासूसी, फैशन करना। याना, 18 वर्ष. फरमाईश भेजना।

सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय ज्येष्ठाराम-अशोक कुमार अग्रवाल बेदी गली जय गोपाल बिल सुरेन्द्रनगर गिरधारी लाल अग्रवाल पो.
जी पाण्डेय पो. निम्बी जोधां जि. रामनगर, सहारनपुर-247001, 20 शिवपुरी, लुधियाना, 24 वर्ष, बलियापुर जि. धनबाद (बिहार)
नागौर राज. 17 वर्ष क्रिकेट। वर्ष, टिकट संग्रह, दोस्ती करना। दीवाना पढ़ना. सैर करना। 22 वर्ष दीवाना पढ़ना।

संजीव कुमार चौधरी गली नं 2 सुनील कुमार गोयल सी-64
शास्त्री कालोनी सिरसा हरियाणा कमला नगर 16 वर्ष दीवाना
20 वर्ष रेडियो सुनना। पढ़ना दोस्ती करना।

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी,
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२,
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में
साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

____

आयु ____ शौक ____________

तेज प्रेस ८-बी बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

वर्ग पहेली

१० रू. इनाम जीतिए

संकेत

बायें से दायें

१. जानवर के पीछे लगा बेवकूफ आदमी ? (३, १, २)

६ तेज बॉलर के पीछे से देखा ? (२)

७ निमोनिया के बीच में बंधनी के बाद खोलने वाली लड़की ? (३)

८ प्यासे को क्या चाहिये पैसा कीचड़ में ? (२)

१०. आधे कपड़े से बना जहाज़ ! (२)

१२. अधूरे माल में मल डाल कर बनाया गया भर्त्ता। (३)

१३. पुरानी शासिका जिसके पीछे शायद एक राष्ट्रपति पड़ा है ! (३)

१५ सफाई का फल ? (२)

१७ ऐसे मिली वस्तु पुरात्व महत्त्व की होगी (३,१)

ऊपर से नीचे

१. वनस्पति की तरह पैदा हो। (२)

२. पड़ौस की राजधानी जिसका बाद में पतन हुआ। (३)

३. बर्फ़ीली प्रदेश वासी का अंत। (२)

४. इसे निभाने के लिये व्यावहारिक होना आवश्यक है। (५)

५ दिल में का आश्रय ! (३)

९. प्राकृतिक नहीं है यह ! (४)

११. एक देहाती नाम जिसमें अंत में उल्टा पैर है जानवर का (३)

१४. बेसिर साज़िदा ! (२)

१६ इसे लेने के बाद पीछे हटना नहीं पड़ता। (२)

अन्तिम तिथि—२२-८-१९८९

अंक नं. ११ मे प्रकाशित वर्ग पहेली का हल विजेता :

के. जी. आलम
ऊँचापुर, सरधना,
(मेरठ) २५०३४२

अमोल पालेकर

दीवाना

छायाकार : अमिता देशमुख

सीधी-सादी इमेज वाला

अमोल पालेकर

स्टेज की दुनिया से कितने ही कलाकार रूपहले पर्दे की रौनक बने हैं। अपने जमाने का सुपर स्टार राजेश खन्ना भी स्टेज से ही फिल्मों तक पहुंचा है। इसी तरह सफल स्टेज कलाकारों में अमोल पालेकर का नाम भी गिना जाता है जो स्टेज की दुनिया को पार करके पर्दे तक पहुंचा है।

अमोल पालेकर स्वयं स्टेज आर्टिस्ट रहा ही है उसकी पत्नी भी प्रसिद्ध स्टेज आर्टिस्ट है। स्टेज से ही दोनों ने जिन्दगी का सफर आरम्भ किया। अमोल पालेकर 'छोटी सी बात' में विद्या सिन्हा के साथ जब पर्दे पर आया तो दर्शकों ने इस जोड़ी का खुले दिल से स्वागत किया। फिल्म 'छोटी सी बात' दोनों ही नये कलाकारों के कारण अपनी अलग विशेषता बना गई। ये हल्की फुल्की मनोरंजन फिल्म जब सफल हुई तो अमोल पालेकर की मध्य वर्ग युवक की एक ऐसी इमेज बन गई जिसे तोड़ पाना स्वयं अमोल पालेकर के लिए कठिन हो गया।

अपनी आगामी फिल्मों में अमोल पालेकर को ऐसी इमेज से मिलते-जुलते रोल मिले और जल्दी ही अमोल पालेकर पर टाइप्टड हीरो. की छाप लग गई।

पिछले दिनों प्रदर्शित 'नरम-गरम' में अमोल पालेकर ने फिर ऐसी ही भूमिका निभाई जिसमें गरीबी व मजबूरी साफ झलकती है लेकिन हास्य प्रधान फिल्म होने के कारण 'नरम गरम अमोल पालेकर के अभिनय की और नवोदिता स्वरूप सम्पत की भी चर्चा रही।

हाल ही में प्रदर्शित फिल्म 'आंचल में अमोल पालेकर ने जो भूमिक निभाई है उसके चर्चे लम्बे चलेंगे। एक जमींदार जो अपनी पत्नी (राखी) और भाई (राजेश खन्ना) के सम्बंधों पर शक करता है और अन्त में पत्नी को तलाक देकर एक अन्य युवती (रेखा) से विवाह करना चाहता है।

अमोल पालेकर ने इस भूमिका में वास्तव में जान डाली है। दिलो-दिमाग से परेशान व्यक्ति के जो भाव अमोल ने चेहरे पर प्रकट किये हैं वह कोई सुलझा हुआ कलाकार ही कर सकता है।

अमोल पालेकर ने स्वयं बताया "स्टेज की दुनिया से आये कलाकार फिल्मों में अधिकतर सफल रहते हैं क्योंकि वह स्टेज पर बहुत कुछ सीख जाते हैं स्टेज पर दर्शकों का सीधा सामना करना पड़ता है लिहाजा कलाकार बिल्कुल मंझ जाता है। मेरी सफलता का भी शायद यही कारण है।

विजय भारद्वाज